



जुड़ने और जोड़ने के लिए

कान्यकुब्ज वाणी

2019



सोमनाथ मन्दिर प्रभास पत्तन
गुजरात

होली मिलन समारोह 2018



दीप प्रज्ज्वलन



पुरस्कार देते हुए मुख्य अतिथि



अध्यक्षीय सम्बोधन



महासचिव की रिपोर्ट



डॉ. शुक्ला की पुस्तक का विमोचन 05 अक्टूबर 2018





माँ शारदा की वंदना

वर दो हे वीणापाणि! वाणी श्री का वर दो माँ,
अमल, अमोघ प्राणशक्ति हिय भर दो।
दूर करो विघ्न विनाश तम का करो माँ,
श्वेतवसना हो मुझे स्वच्छता अमर दो।।
ज्ञान राशि मंडित प्रभाकर समुज्ज्वला हो,
मुझमें सुबुद्धि का प्रसार मातु कर दो,
पाप मिट जाएँ अवगाहन से जिसमें माँ,
चरण-कमल युक्त भक्ति मानसर दो।।

डॉ अमित अवस्थी

ला मार्टीनियर कॉलेज, लखनऊ।

विषय सूची

1. स्तुति	1
2. अध्यक्ष का संदेश	3
3. संपादकीय	4
4. आवरण कथा—जय सोमनाथ	5
5. तीर्थवर नैमिष विख्याता...	9
6. दोहे	11
7. Jinnah rises from his photograph	13
8. शहर बदल गया है	17
9. जीवन की आपाधापी में	20
10. TRACE ELEMENTS IN HUMAN BODY	21
11. दैनिक स्वर्गलोक समाचार	37
12. कान्यकुब्ज वाणी आभा मण्डल	39
13. कार्यकारिणी अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा	43
14. मंच पर पारितोषिक पानी वाली छात्राएं	45
15. साइकिल व स्टेशनरी पाने वाली छात्रायें	47
16. सहयोग के लिए जिनके हम आभारी हैं	48
17. Shashi Tharoor's Scalding Oxford Union Speech...	49
18. कैकेयी (उपन्यास 'रामानुज' की दूसरी कड़ी)	57
19. निर्णायक समझौता	63
20. शान—ए—अवध	67
21. जीवन साथी	69
22. अमृता प्रीतम जी की वसीयत	83
23. श्रद्धांजलि—1	85
24. श्रद्धांजलि—2	86
25. मनुर्भव ! मनुष्य बनो	87
29. सदस्यता फार्म	88

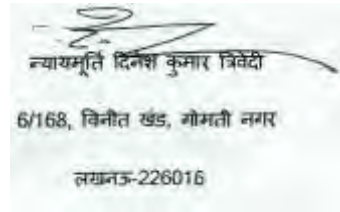
सन्देश



कान्यकुब्ज वाणी पत्रिका सन् 2010 से निरन्तर प्रकाशित हो रही है। हर्ष का विषय है कि 'कान्यकुब्ज वाणी' का दसवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इसके लिए संस्था एवं पत्रिका का सम्पादक मण्डल बधाई के पात्र हैं। 'जुड़ने और जोड़ने के लिए' 'आदर्श वाक्य' के साथ प्रारम्भ की गई यह पत्रिका अपने उद्देश्य प्राप्त करने में आशातीत सफलता प्राप्त की है। नवोदित साहित्य रचनाकारों को अपनी रचनाओं को प्रकाशित कराने का माध्यम उपलब्ध कराना भी इस पत्रिका का उद्देश्य है। अतः आशा करता हूँ कि अधिक से अधिक रचनाकार पत्रिका से जुड़ेंगे और रचनाएँ भेजेंगे।

अखिल भारतीय कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा में नए सदस्य जुड़ तो रहे हैं, परन्तु सदस्य संख्या में वृद्धि की गति जितनी होनी चाहिए उतनी नहीं है। संस्था-सदस्यता संख्या वृद्धि के लिए हर सदस्य को व्यक्तिगत प्रयास करना होगा।

होली की बहुत शुभकामनाओं सहित!



न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी

6/168, विनोद खंड, गोमती नगर

लगान-226016

सम्पादकीय

आज वाणी का दसवाँ अंक समर्पित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। जन्म के दस वर्षों के बाद जातकों में वैचारिक परिपक्वता प्रारम्भ होने लगती है। ऐसी परिपक्वता 'वाणी' में भी परिलक्षित हो, ऐसी संपादक मण्डल की अभिलाषा है।



इस अंक में गत वर्ष की कुछ घटनाओं का निष्पक्ष विश्लेषण करने का प्रयास हुआ है। आशा करता हूँ कि नई पीढ़ी के लिए यह तथ्य ज्ञानवर्धक होंगे। पीढ़ी के संदर्भ में याद आया कि किसी भी संस्था की निरंतरता के लिए सही समय पर नई पीढ़ी का समावेशन आवश्यक है। परंतु कान्यकुब्ज सभा और वाणी पत्रिका के संदर्भ में हम नवयुवकों से अपेक्षा नहीं करते कि अपने कैरियर को छोड़ इस कार्य में सम्मिलित हों। हमारी अपेक्षा पाँचवें और छठवें दशक में चल रही पीढ़ी से है, जो अपने कैरियर के शीर्ष पर है और थोड़ा सा समय इस परोपकारी कार्य में लगा सकती है। ऐसे अनुभवी लोगों से अपेक्षा है कि वह संस्था का दायित्व वहन करने हेतु आगे आयें। उनका स्वागत है।

गत वर्ष लोकप्रिय जन नायक पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी जी का देहावसान हो गया। इस अजातशत्रु देशभक्त, राजनेता, कोमल भावों वाले कवि के न रहने से मात्र कान्यकुब्ज समाज अथवा भारत ही नहीं पूरा विश्व वंचित हुआ। हम उनकी स्मृति को नमन करते हैं।

इसके अलावा 'वाणी' के सह संपादक इं० एस० एन० दीक्षित व कान्यकुब्ज परिवार की डा० अर्चना त्रिपाठी का असामयिक निधन हो गया। हम उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हैं।

सभी को होली की बधाई के साथ नव संवत्सर 2076 में सभी को सुख शांति एवं उन्नति की प्राप्ति हो, शुभेच्छा के साथ प्रस्तुत है 'कान्यकुब्ज—वाणी' 2019 का नवीनतम अंक।

सम्पादक

(डॉ० डी०एस० शुक्ला)

18/378 इन्दिरा नगर, लखनऊ—226016

ईमेल—dsureshdp@rediffmail.com

मो० : 9415469561, 7007429802

जय सोमनाथ

गुजरात के प्रभास पत्तन में समुद्र के किनारे कपिला, हिरण और सरस्वती नदियों के त्रिवेणी संगम पर स्थित भगवान् शंकर का प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर पवित्र 'द्वादश ज्योतिर्लिंगों' में सबसे प्राचीन माना जाता है।

कहते हैं कि एक बार दक्ष—प्रजापति ने कुपित होकर अपने जामाता चन्द्रमा को निरंतर क्षय होने का श्राप दे दिया। श्राप—ग्रसित चंद्रमा ने क्षय से मुक्त होने के लिए भगवान् शिव का एक विग्रह बना कर श्राप मुक्त होने की प्रार्थना करी। देवाधिदेव आशुतोष शंकर ने प्रसन्न होकर चन्द्रमा के निरंतर क्षय होने के श्राप मात्र एक पखवारे तक ही सीमित होने का आशीष दिया। जनश्रुति है कि तब से चंद्रमा कृष्ण—पक्ष में घटते घटते अमावस्या को लुप्त हो जाता है, और अगले दिन शुक्ल पक्ष से वह पुनः वृद्धि को प्राप्त होने लगता है। चंद्रमा द्वारा यह स्थापित विग्रह ही चन्द्रमा के (सोमदेव) नाम पर 'सोमनाथ महादेव' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सबसे प्राचीन होने के कारण यह भारत के सर्वाधिक मान्य मंदिरों में से एक है।

चंद्रमा अथवा सोमदेव द्वारा विग्रह कब स्थापित हुआ यह नहीं कहा जा सकता। पाश्चात्य इतिहासकारों के अनुसार वल्लभी के यादव नरेशों द्वारा 649 ईस्वी में इसका पुनरुद्धार हुआ।

बचपन में पढ़ी के एम मुंशी रचित 'जय सोमनाथ' और आचार्य चतुरसेन विरचित 'सोमनाथ' व अन्य कहानियों में सोमनाथ की भव्यता का वर्णन था। सोमनाथ की इन कहानियों में सोमनाथ के विग्रह को निराधार आधार में लटका हुआ बताया गया था। मैकाले की शिक्षा पद्धति के अज्ञान भरा मेरा बालमन विग्रह के निराधार टिके होने पर विश्वास नहीं कर सका। इस अज्ञान के चलते विग्रह के 'निराधार' होने के तथ्य को निरी गल्प और पुरातन भारतीय मनीषियों की स्वयं श्रेष्ठता सिद्ध करने की मनोग्रन्थि ही मान सका। किन्तु बाद में एक तुर्की चिकित्सक, वैज्ञानिक, भूगोल वेत्ता एवं पर्यटक जकारिया बिन मुहम्मद बिन महमूद, अल कजविनी के भारत यात्रा संस्मरण में विग्रह के निराधार टिके होने का वर्णन पढ़ कर विश्वास हुआ। जकारिया ने सोमनाथ मंदिर का उल्लेख कुछ इस किया था।

“भारत के समुद्र तट पर स्थित एक भव्य मंदिर में प्रसिद्ध सोमनाथ का विग्रह था। यह विग्रह मंदिर के बीचों बीच बगैर किसी सहारे के निराधार लटका था। काले पत्थरों से बना गर्भ गृह हीरे जवाहरातों से जड़े झाड़ू—फानूसों से प्रकाशित था। गर्भगृह में 56 टीक के स्तम्भ जिन पर सीसा मढ़ा था, के बीचों बीच विग्रह निराधार लटका था। विग्रह में लगे हीरे जवाहरात झाड़ू—फानूसों के प्रकाश

में जगमग कर रहे थे। मुहम्मद इस निराधार टिके विग्रह को देख कर चकित रह गया। उसके एक सैनिक ने विग्रह के चारों तरफ भाला घुमा कर देखा। विग्रह वास्तव में निराधार था। सुलतान ने विग्रह के चारों ओर बने सात स्तंभों को तोड़ने को कहा। पहले स्तम्भ टूटने पर विग्रह एक ओर झुक गया। एक एक कर चार स्तम्भ तोड़ने पर विग्रह जमीन पर गिर पड़ा।”

विग्रह सात स्तंभों के बीच किसी चुम्बकीय शक्ति से निराधार स्थित था।

जकारिया ने लिखा “चन्द्र ग्रहण के अवसर पर यहाँ लाखों की तादाद में हिन्दू तीर्थ यात्री एकत्र होते थे। समुद्र के ज्वार भाटा से भक्तों को लगता था मानो समुद्र सोमनाथ की अर्चना कर रहा हो। इस मंदिर को 10,000 से भी अधिक गाँवों की जागीर प्राप्त थी। सोमनाथ से भारत की पवित्र नदी ‘गंगा’ 200 पारसंग (एक पारसंग=7.456 मील अथवा 1200 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित गंगा से नित्य गंगाजल मंगाया जाता था जिससे विग्रह का अभिषेक होता था”

आज के आधुनिक मानचित्र को देखने पर प्रतीत होता है कि अभिषेक के लिए गंगाजल कन्नौज अथवा ‘कान्यकुब्ज’ से लाया जाता होगा, जो सोमनाथ से 200 पारसंग दूर स्थित है।

भारत में देवस्थानों की देख रेख एवं साज सज्जा के प्रबंधन हेतु उस प्रदेश के शासकों द्वारा एक निश्चित इलाके के जागीर प्रदान की जाती थी। इस जागीर से प्राप्त मालगुजारी से पुजारी की जीविका और देवस्थान का रख रखाव होता था। इसके अलावा भक्तों के चढ़ावे द्वारा भी मंदिरों काफ़ी आय हो जाती थी। जागीर के अलावा पूरे भारत से इस सोमनाथ मंदिर को इतना अधिक चढ़ावा आता था कि यह मंदिर संसार के सबसे वैभवशाली स्थलों से एक था। मंदिरों की यह सम्पदा मात्र वैभव प्रदर्शन हेतु एकत्र नहीं होती थी। ईति काल में (अकाल, चूहा, टिड्डी दल अथवा अग्निकांड में फसल के नष्ट होने पर) प्रजा को भुखमरी से बचाने हेतु इन मंदिरों में संग्रहीत यह धन काम आता था।

मंदिरों की यह धन और सम्पदा जहाँ एक ओर भक्तों और पर्यटकों को आकर्षित करती है वहीं, लुटेरों को भी ललचाती रही। अपनी अपार सम्पदा के कारण यह सोमनाथ मंदिर सदियों से बाह्य आक्रांताओं की कुदृष्टि का केंद्र रहा, और इतिहास में संभवतः, सबसे ज्यादा बार आतताईयों द्वारा विध्वंस किया और लूटा गया।।

संक्षेप में— 649 ईस्वी के पुनरुद्धार के बाद इसे सिंध के अरब गवर्नर अल-जूनियाद ने तोड़ा, 815 में गुर्जर-प्रतिहार राजा नागभट्ट फिर से ने बनवाया, 1024 में राजा भीम के समय मुहम्मद गजनवी ने लूटा, तब 1169 में कुमारपाल ने इसे बनवाया, 1299 में अलाउद्दीन खिलजी ने तोड़ा, राजा महिपाल ने 1308 में

बनवाया, 1395 में दिल्ली सुल्तान के अधीन गुजरात के अंतिम गवर्नर जफर खान ने तुड़वा दिया। सन् 1451 में गुजरात के महमूद बेगाड़ा ने और 1546 में पोर्चुगीज ने इस मंदिर को नष्ट किया।

1665 में इसे अंतिम बार बार औरंगजेब ने तुड़वा कर एक मस्जिद बनवा दी। कहते हैं कि मंदिर का वैभव सुन औरंगजेब भी इस मंदिर को देखने आया। मंदिर का शिखर इतना ऊंचा था कि उसे सिर उठा कर देखने में औरंगजेब की पगड़ी गिर गई। कुपित बादशाह ने मंदिर को ध्वंस करने का आदेश दे दिया। सोमनाथ का यह मंदिर दोबारा न बन सके अतः उसने यह ऐलान भी किया कि इसके पुनर्निर्माण का प्रयास करने वाला मृत्यु-दंड का भागी होगा। इस कारण से यह मंदिर 17 वीं शताब्दी के बाद से खंडहर के रूप में देशवासियों के मन-मानस पर नासूर भाँति रिस रहा था।

20वीं शताब्दी में आजादी के समय प्रभास पत्तन का क्षेत्र जिसमें मंदिर था, जूनागढ़ राज्य में पड़ता था। सरदार पटेल जूनागढ़ को भारत में विलय करने के बाद जब इस क्षेत्र में आए तो मंदिर के भग्नावशेष देख कर उन्हें बहुत कष्ट हुआ। उन्होंने तुरंत ही 20 नवंबर 1947 को मंदिर स्थान पर बने तमाम निर्माणों को हटा कर भव्य सोमनाथ मंदिर के निर्माण का आदेश दिया।

मई 1951 में गुजरात के तत्कालीन गवर्नर के एम मुंशी के निमंत्रण पर तत्कालीन राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने मंदिर की नींव रखते कहा था कि, "गत समय में भारत एक बहुत ही सम्पन्न देश था। यही कारण था कि उसके देवस्थान भी बहुत वैभव पूर्ण थे। सोमनाथ का यह मंदिर अपनी पुरानी गरिमा को तभी प्राप्त होगा जब सम्पूर्ण भारत गरीबी के चंगुल से निकल समृद्ध बने" फिर भाव विह्वल होकर कहा "सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण सिद्ध करता है कि सृजनात्मक शक्तियाँ ही सदैव विजयी होती हैं"

वर्तमान सोमनाथ मंदिर की भव्यता को देख कर डा इकबाल का शेर याद आता है—

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

सदियों रहा है दुश्मन, दौरे जहाँ हमारा

विग्रह और मंदिर की भव्यता देख कर बाहर निकलने पर सरदार पटेल की भव्य 12 फीट ऊंची मूर्ति के दर्शन होते हैं। उनका भारत के एकता और सांस्कृतिक विरासत के लिए योगदान को स्मरण कर सिर श्रद्धा से झुक जाता है।

मंदिर के दक्षिणी दीवार समुद्र की ओर है। इस दीवार पर जगह जगह सुरक्षा चौकियाँ बनी हैं, क्योंकि आज भी यह मन्दिर इस्लामिक आतंकवादियों की निगाह में है।

इसी प्राचीर पर बना स्तम्भ है जिसे 'बाण-स्तम्भ' कहते हैं। यह स्तम्भ प्राचीन भारत के ज्ञान को प्रदर्शित करता है।



‘बाण स्तम्भ’

इस बाण स्तम्भ पर लिखा है ‘आसमुद्रान्त दक्षिणध्रुव पर्यंत आबाधित ज्योतिमार्ग’ — जिसका मतलब है कि— यहाँ से दक्षिण ध्रुव तक समुद्र में अबाधित प्रकाश मार्ग” अर्थात् इस बिन्दु से दक्षिणी ध्रुव तक समुद्र मार्ग में कोई भी भूभाग नहीं है”

इस तथ्य को नासा ने भी पुष्ट किया कि दक्षिणी ध्रुव से सोमनाथ मंदिर तक देशांतर रेखा में कोई भी भूभाग नहीं पड़ता। इस तथ्य का परीक्षण गूगल मान चित्र (गुगल मैप) किया जा सकता है।

“तीरथवर नैमिष विख्याता अति पुनीत साधक सिद्धि दाता”

पुराणों में वर्णित विश्व में पाये जाने वाले सात अरण्यों में नैमिषारण्य नाम का अरण्य प्रमुख है। यह सीतापुर व हरदोई जिले की सीमा पर जिला सीतापुर से 33 किमी० दक्षिण दिशा में स्थित है। यहाँ आदि गंगा गोमती नदी बहती है, जो सीतापुर व हरदोई जिले को विभाजित करती है। सीतापुर व नैमिषारण्य के मार्ग पर नैमिषारण्य से 9 किमी० तथा सीतापुर से 23 किमी० की दूरी पर मिश्रिख नामक तीर्थ स्थित है। जहाँ महर्षि दधीचि ने वृत्रासुर नामक असुर को मारने हेतु देवताओं की याचना पर अपनी अस्थियों को दान कर दिया था। नैमिषारण्य के आस-पास 84 कोस की परिधि में संसार के सभी तीर्थ स्थित हैं। जब देवता वृत्तासुर से पराजित हो गये तो वे महर्षि दधीचि, जो बड़े तपस्वी व दानी ऋषि थे, के पास गये और उनकी अस्थियों की याचना की तो महर्षि सहर्ष तैयार हो गये परन्तु उन्होंने कहा मैंने अभी तीर्थ यात्रा नहीं की है यदि मैं बिना तीर्थ यात्रा के प्राण त्याग देता हूँ तो यह ऋषि एवं वैदिक परम्परा के प्रतिकूल होगा। इस पर देवताओं ने कहा यदि आप तीर्थ यात्रा पर जायेंगे तो अधिक समय लगेगा। तब तक दैत्य सभी देवताओं का विनाश कर देंगे और धरती पर असुरों का आधिपत्य हो जायेगा। अतः सभी देवताओं ने भगवान् विष्णु से अनुनय विनय की कि वह समस्या का निदान बतायें। भगवान् विष्णु ने कहा आप सब मिलकर सभी तीर्थों को नैमिषारण्य आने का आवाहन करो। जब सभी तीर्थ नैमिषारण्य आ जायेंगे तो महर्षि दधीचि उनकी परिक्रमा कम समय में कर लेंगे। इस प्रकार भगवान् विष्णु के परामर्श से समस्त तीर्थों का नैमिषारण्य आने का आवाहन किया गया। समस्त तीर्थ देवताओं के सहयोग हेतु नैमिषारण्य तीर्थ के आसपास 04 कोस की परिधि में आसीन हो गये परन्तु प्रयागराज तीर्थों के राजा थे, जो देवताओं के आवाहन पर नहीं आये तब पाँच देवताओं ने मिलकर पंचप्रयाग की स्थापना मंत्रों द्वारा की, जो ललिता देवी मन्दिर के पूर्व दक्षिण दिशा में स्थित है। समस्त तीर्थों के आसीन हो जाने पर महर्षि दधीचि ने 15 दिन में उनकी परिक्रमा की तथा समस्त तीर्थों के मिश्रित जल से स्नान कर अपने प्राणों को ब्रह्माण्ड में स्थापित कर दिया। तत्पश्चात् सभी देवताओं ने गाय का रूप धारण कर महर्षि के शरीर को चाट कर माँस एवं रक्त विहीन कर दिया, फिर उनकी अस्थियों से कई महत्त्वपूर्ण धनुषों का निर्माण हुआ, जिनमें से एक धनुष से वृत्रासुर का वध हुआ। यह स्थान मंदिर नैमिषारण्य की परिधि में आता है। आज भी समस्त विश्व के ऋषि मुनि 15 कोसीय परिक्रमा हेतु इस पावन तीर्थ पर फाल्गुन मास में आते हैं।

सृष्टि के आदि पुरुष मनु और शतरूपा ने भी नैमिषारण्य तीर्थ में ही तपस्या की थी तथा भगवान् से वरदान प्राप्त किया था। अतः इसे मनु शतरूपा की तपस्थली भी कहा जाता है। 88 हजार ऋषियों ने भी नैमिषारण्य तीर्थ पर आकर तपस्या की।

इस हेतु नैमिष तीर्थ को 88 हजार ऋषियों की तपस्थली भी कहा जाता है।

पुराणों के अनुसार महर्षि वेदव्यास, जो ऋषि पराशर के पुत्र थे, ने भी यहीं पर वट वृक्ष के नीचे बैठकर चारों वेद व अठारह पुराणों तथा समस्त उपनिषदों की रचना की थी तथा गणेश जी ने उनका समस्त लेखन कार्य सम्पादित किया था। वह स्थान आज भी व्यास गद्दी के नाम से प्रसिद्ध है। हजारों यात्री प्रतिदिन दर्शनार्थ यहाँ आते हैं। व्यास गद्दी के निकट महर्षि सूत गद्दी व शौनक ऋषि की कुटी भी दर्शनीय है।

देवी पुराण के अनुसार इसी अरण्य में महिषासुर नाम का दैत्य पैदा हुआ था। जिससे प्रजा दुःखी थी। तब समस्त देवताओं ने आदिशक्ति माँ जगदम्बा की प्रार्थना की फलस्वरूप माँ जगदम्बा ने अपने चक्र से उस महिष रूपी महिषासुर का वध किया था वहीं चक्र धरती में समाहित हो गया। जहाँ से सतत जलधारा निकलकर गोमती नदी में जाती है। नैमि अर्थात् धुरी—चक्र के गिरने से इसका नाम नैमिषारण्य हो गया। वहाँ पर आज भव्य तीर्थ, चक्रतीर्थ स्थित है। जहाँ प्रतिदिन हजारों की संख्या में समस्त विश्व के लोग दर्शनार्थ आते हैं।

शिवपुराण तथा अन्य पुराणों के अनुसार जब भगवान् भोले शंकर की पत्नी सती ने अपने शरीर को, अपने पति के अनादर पर यज्ञ में समर्पित कर दिया था। तब भगवान् शंकर ने माँ सती के शरीर को लेकर समस्त विश्व में भ्रमण किया, जिससे उनके शरीर का एक—एक भाग अलग—अलग स्थान पर गिरा। इस प्रकार के स्थानों पर उके अंग गिरने के कारण अलग—अलग नामों से शक्ति पीठ व मंदिर बनें। माँ सती का हृदय भाग नैमिषारण्य से गिरा जो प्रसिद्ध शक्तिपीठ श्री ललितादेवी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है, यह प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु दर्शनार्थ आते हैं।

इस प्रकार नैमिष तीर्थ समस्त तीर्थों से श्रेष्ठ है। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में वर्णन किया है। सभी तीर्थों को जाने के बाद बिना नैमिष तीर्थ आये तीर्थों का फल प्राप्त नहीं होता। ऐसा पुराणों में भी वर्णित है। इस प्रकार यहाँ अनेक सिद्ध स्थान तथा अनेक ऋषियों के आश्रम भी आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते हैं। मंदिरों में ललिता देवी मंदिर, रामशबरी मंदिर, काली पीठ, प्रसिद्ध देवदेवेश्वर मंदिर, सेतुबन्धरामेश्वरम् मंदिर आदि अनेक देवी देवताओं के मंदिर दर्शनीय हैं।

इस प्रकार 88 हजार ऋषियों की तपस्थली चारों वेद अठारह पुराणों एवं उपनिषदों का रचना स्थल, माँ ललिता देवी शक्ति पीठ, पावन वक्र तीर्थ, मिश्रित तीर्थ तथा महाराजा मनु व महारानी शतरूपा की तपस्या स्थली व आध्यात्मिक, वैदिक, पौराणिक तथा सांस्कृतिक शिक्षा का केन्द्र नैमिषारण्य का महत्व अद्वितीय है, जिसका वर्णन करना मानव मात्र के ज्ञान से परे है।

— रामजी मिश्र, खैराबाद—सीतापुर

दोहे

पद पायहु नंहि कीजिये रंचमात्र अभिमान ।
जल तरंग सम थिर नहीं ठाँव न रहे निदान ॥

गाव प्रदक्षिण जो करै वन्दनीय वरु होय ।
क्लेश कष्ट दूरी रहैं निज नव मंगल होय ॥

अन्धे बनकर स्वार्थ रत करते हैं जो पाप ।
मनुज नहीं वे दनुज हैं भोग रहे त्रय ताप ॥

रोना धोना बन्द कर करो प्रभु का गान ।
शांति विरति मुदिता मिलै फूटै हिय में ज्ञान ॥

दिग दिगन्त पुष्पित रहैं होवे कोकिल गान ।
संत चरण के वास से करें मधुप रस पान ॥

सर्व भूत हित रत रहैं द्वेष दोष विनसाय ।
तिनकै प्रीति सुहावनी बड़भागी जे पाय ॥

डॉ. अश्वनी कुमार बाजपेई,
मध्यप्रदेश



शंकर गेस्ट हाउस

ए.सी. एवं नान ए.सी. कमरे उपलब्ध हैं

प्लॉट नं० 5, सरस्वती पुरम, निकट पी.जी. आई.
रायबरेली रोड, लखनऊ

सुशील दीक्षित
योगेश कुमार
पंकज

Jinnah rises from his photograph

British were surprised in 1857 when Hindu majority revolted against Company Sirkar under leadership of a Mohameden ruler (Bahadur Shah). As result East India Company ceased to rule India. (thus, the first freedom movement was not a failure, as told by historians). Government of Great Britain realized that to continue their control over India they have to alienate Muslims from Hindus.

While invading Turkey they expected its repercussion in India. They were sure to get agitation from Muslims of India while Hindu majority to support them. But contrary to their expectations Gandhi's supported Muslim discontentment, through his Khilafat Movement. It rather enhanced the unity between two communities

Mohammad Ali Jinnah

Till 1916 Momammad ali jinnah was amongst top leaders of Indian National Congress. He considered Gopal Krishn Gokhle and Jivaji Mehata as his mentor. He wanted Muslim, Hindu, Prasies and Christians of India to unite to overthrow British rule.

BUT THEN GANDHI ENTERS Congress

Till now all leaders addressed public meetings in fluent English, which, very few amongst audience could understand. It was because gathering which comprised of common man did not understand English language. When Gandhi addressed first public meeting in local language, everybody could understand. They stood and applauded Gandhi. It was a rare sight. After that Gandhi became soul, philosopher, and guide of Congress, aswell as also of National Freedom Movement. Jinnah at this stage opposed Gandhi and his tactics. BUT, Gandhi who had become very powerful in Muslims as well due to Khilafat Movement, road rolled Jinnah. In 1920 congress session, when Jinnah rose to oppose Gandhi on Satyagrah, he was booed down by delegates

Jinnah, a great egoist, felt marginalized by Gandhi. He saw no top spot for him in Congress, after rise of Gandhi. So he left India and freedom movement for ever. He established himself in legal practice in London

England knew they will have to vacate India. This pressure was not due to any humanitarian consideration. It was due to freedom movement under Gandhi and pressure from America and other European countries These countries also wanted their

share in abundant natural resources and big market of India, which till now only Britain had sole control.

Out of frustration, British (read Churchill) planned fragmentation of India

In these political background Momammad ali jinnah' was meticulously planted by British

The then Viceroy contacted Dr Muhammad Iqbaal. Dr Iqbal was famous for his poem "Sare Jahaan Se Achchha Hindostan Hamara" and also who did not like the idea of living in Hindu dominated Bharat. He was amongst firsts, who dreamed and cherished separate nation ruled by Muslims only. It is said, that he was sent to Jinnah with promise of separate state for him. Jinnah grabbed the opportunity and returned to India, with idea of 'Two Nation Theory'

In 1937 election Muslim league could not win even in Muslim majority places, congress got majority everywhere. 1942 elections while all leaders of congress were in jail due to Quit India movement, League could manage to win seats only in 'Muslim minority states'. Where as congress got majority in Muslim majority states as well. It is said that this win in Muslim minority states was due to insecurity paranoia amongst Muslims, spread by league. Still congress bagged more Muslim votes than League.

Even then British declared Muslim League under Jinnah to be sole representative of Muslims in India

British also incited Dr Aambedkar to strive for a separate Dalit State. Under pressure of Gandhi's fast and public opinion, Dr Aambedkar withdrew his demand.

In 1939 Jinnah in early sixties felt his deteriorating health. He became aware that he has not much time left with. He made his will and started to complete his assignments. The sole assignment he strived for was for separate Sate of Pakistan for himself.

Congress knowing the divide and rule policy of British, did not want partition of India. They believed that Jinnah can be persuaded. But due to his health Jinnah was a 'man in hurry'. He behaved like Nadir Shah. Every time Congress opposed creation of separate state, he threatened with Direct Action. Direct Action, meant 'Mass Massacre' or 'Qatle-Aam of Hindus'

To give a taste, Jinnah asked for Direct Action on 16th August 1946. Riots broke out in Calcutta resulting into killing of 7000-10000 persons (mostly Hindus). In September again riots in Noakhali killed some 5000 Hindus and many times more were forcibly converted to Islam under threat. (Direct Action Day, Wikipedia)

In a knee-jerk response communal riots broke out all India; India where they lived in harmony for centuries.

Congress had to accede to partition which resulted creation of Pakistan. The country was trifurcated.

Though, Churchill had worst plan- to divide India into two Pakistan, one Hindustan and a big 'Princistan' comprising of 600 independent Princely states.

It was the iron will of Sardar Patel who amalgamated princely states into Republic of India

Aligarh Muslim University-

Aligarh Muslim University (AMU) is an Indian public central university. It was originally established by Sir Syed Ahmad Khan as Mohammedan Anglo-Oriental College in 1875, later was rechristened as **Aligarh Muslim University** in 1920.

Sir Sayad, who founded AMU was great supporter of Hindu-Muslim unity. He said, on 27 January 1884, in Gurdaspur.... "Remember that the words Hindu and Mohammadan are only means for religious distinction—otherwise all persons whether Hindus or Mohammadans, even the Christians who reside in the country, are all in this particular respect belonging to one and the same nation.... I call both those races which inhabit India by one word, i.e. Hindu, meaning to say that they are the inhabitants of Hindustan"

Before 1939, faculty members and students supported an all-India nationalist movement. After university became a centre of [Pakistan Movement](#). [\[13\]](#) [\[14\]](#)

Jinnah knowing very well, that seeds of hatred dies very hard. So, even after Partition he maintained close contact with AMU. Donations from him (Jinnah) kept flowing in AMU. The then government, either did suspect or just overlooked this association. The ambers of hatred kept smouldering in the campus, with occasional flare ups.

Photo of Jinnah adoring the hall of AMU, is a constant reminder of Hindu-Muslim animosity. While on other side of border, monuments and statues of other leaders of freedom movement were destroyed, as they they did not belong to newly born state of Pakistan

Student of AMU agitating in favour of Jinnah, should look up the history and realize that-

'After crushing Turkey, it was made to sign a treaty that 'Muslims of Turkey, will have nothing to do with Muslims of Russia'. Thus, after immunizing Turkey from Russian influence, they concentrated their effort to secure a sea way through 'Gwadar Port and to mineral rich northwest frontier region of India. They needed this region to keep an eye over Russia & China. So they created West Pakistan and by creating East Pakistan they secured safe access to Bay of Bengal, as well'

Student of AMU agitating in favour of Jinnah, should look up the history and realize that-

- He was responsible for murder of thousands of Hindu And Muslims due his 'Direct Action'
- He and only he was responsible for death of more than 2, 00,000 people (Hindu and Muslim both) during exchange of population across two nations.
- Only comparison to this holocaust is the forced migration of Jews by Nazis during Second World War. But those Jews were provided trains for this purpose, while most of the poor Indians had to cross the border on foot or on bullock-carts.
- Jinnah became experimental person in famous British policy of 'Divide and Rule'
- This was later successfully applied in Middle East and creation of Israel.
- Above all- The seed of fragmentation, thus sowed by Jinnah, to carve out a state for him, to rule upon; he plunged the whole world in darkness of terrorism.
- Due to divide and rule policy of western power, Muslims are being massacred by their own 'brethrens', right from Pakistan to Middle East,. Chridtian countries are supplying arms of destruction to all groups. This is like second 'Crusade' in which Muslims are taking the beating.

This unrest in not only limited only in middle-east but, whole world is under the dark shadow of terrorism. Muslims hardly 1% of them, being at fault, has made all Muslims a source of disrespect and hatred.

शहर बदल गया

सालों बाद मौका मिला मुझे अपने शहर जाने का, अपनी गलियों में घूमने और मस्ती करने का, लेकिन देखती हूँ कि समय ने काफी कुछ बदल दिया था। मेरे माता-पिता, जिन्हें मैं काले बालों में छोड़ कर गई थी, अब चाँदी जैसे बालों के मालिक हो गए। मेरा छोटा-सा घर बढ़ते-बढ़ते बंगले का रूप ले चुका था और वे छोटे-छोटे कुत्ते के बच्चे, गाय और भिखारी जाने कहाँ चले गए? मेरे बचपन का अब कुछ नहीं रह गया सिवाय बचपन की तस्वीरों के, जो अब एल्बम में कैद आलमारी में बंद थीं। कुछ भी तो नहीं था ऐसा, जिसे देखकर मैं खुश होती, नाचती-गाती। हो भी कैसे? आखिर अपना शहर, अपना देश छोड़े हुए अठारह साल जो हो चुके थे। इन सालों में मैं कई देशों में रही, कई भाषाएँ सीखीं, कई नौकरियाँ कीं और विद्या, बुद्धि, शक्ति और लक्ष्मी से संपन्न मैं किसी महारानी से कम नहीं थी। यह सब काफी कम उम्र में मुझे मिला। इसके लिए ईश्वर का धन्यवाद। मेरे विदेश जाने की वजह बड़ी सामान्य थी— शादी। हालाँकि शादी की वजह सामान्य नहीं थी, इसका कारण था— मेरी सुंदरता!

एक रिश्तेदार के यहाँ शादी में मेरी सास ने मुझे देखा और देखती रह गई। इकहरा बदन, साँवला लेकिन कहर ढाता हुआ रंग, बादाम सी आँखें, सुराहीदार गर्दन, घुटनों तक लंबे बाल और उम्र सिर्फ सोलह। मुझे भी मेरे रूप ने कुछ गर्वीली बना दिया था। वह कहते हैं न 'खुदा जब हुस्न देता है, नजाकत आ ही जाती है', उन्हें जाने क्या सूझी? मेरे मामा से परिचय पूछा और माँ से रिश्ते की बात कर डाली। माँ का मुँह खुला रह गया, "बहन जी! अभी तो हमारी बेटी पढ़ रही है और शादी लायक उसकी उम्र भी नहीं है। वह कुछ बनना चाहती है तो हम अपनी इकलौती बेटी के अरमान भी नहीं कुचल सकते हैं। आखिर, वही तो हमें बुढ़ापे में सहारा देगी क्योंकि भगवान् ने कोई दूसरी औलाद भी तो नहीं दी।"

लेकिन मेरी सास तो जैसे मुझ पर अपना दिल हार चुकी थीं। वह बोली, "आप जो भी शर्त रखेंगी, मैं सब मानने को तैयार हूँ लेकिन बहू तो आपकी बेटी को ही बनाऊँगी, चाहे मुझे कितना ही इंतजार क्यों न करना पड़े।"

माँ ने पिताजी से बात करने को कहा और उन्हें टाल दिया लेकिन ज्यादा दिन तक नहीं टाल सकीं। एक दिन वह अपने पति यानी मेरे ससुर जी को लेकर हमारे घर आ धमकीं और कहने लगीं, "या तो अपनी बेटी दे

दीजिए या फिर हमें साफ—साफ जवाब दीजिए। हम फिर आप लोगों से कुछ नहीं कहेंगे।”

मेरे माता—पिता को बड़ा अटपटा लगा। पिताजी सकुचाते हुए बोले, “विदा तो करना ही है बेटी को लेकिन यह बहुत जल्दी है।”

मेरी सास बोलीं, “रिश्ता कर लीजिए, शादी बाद में कर लेंगे।”

और इस तरह से बात पक्की हुई। पहली बार मेरे पति जब मुझे देखने आए, तो मैं किसी खूँखार शेरनी के जैसे उनके सामने गई क्योंकि मुझे अपना करियर बनाना था न कि शादी करके घर बसाना। उन्होंने मुझसे कई सवाल पूछे पर मैंने किसी का भी जवाब नहीं दिया ताकि वह समझ जाएँ कि मैं शादी नहीं करना चाहती। उनके हर सवाल पर जी करता कि उठकर एक थप्पड़ मारूँ और कहूँ कि पढ़ने की उम्र में शादी करते शर्म नहीं आती। मैंने न तो बात की, न उनके किसी सवाल का जवाब दिया और न ही उनकी तरफ देखा। शायद वह समझ चुके थे कि शादी के लिए मेरी कोई इच्छा नहीं है। अंततः बात टल गई। मैंने चौन की साँस ली लेकिन मेरी सास बड़ी ही ठीठ महिला थीं क्योंकि करोड़पति की बीवी जो ठहरें। हमारे घर बराबर आती रहीं और मुझसे बाकायदे मेरी पसंद—नापसंद जानने की कोशिश करती रहीं। धीरे—धीरे मेरे मन से उनकी घमंडी छवि मिटने लगी और मेरे मन की इच्छा जानते हुए, उन्होंने इस शर्त पर हाँ करने को कहा कि मैं अपनी इच्छा अनुसार अपनी पढ़ाई और कैरियर चुन सकती हूँ।

मेरे अट्टारह के होते ही, मेरी शादी ठीक मेरे जन्मदिन, दस नवंबर को हुई। माता—पिता ने सामर्थ्य के अनुसार दान—दहेज भी दिया। एक शानदार रिसेप्शन का आयोजन मेरे ससुर जी ने किया। तब मुझे अंदाजा हुआ कि वह तो मेरी सोच से भी अधिक धनवान हैं क्योंकि उस समारोह में फिल्मी हस्तिायों, क्रिकेटर और बड़े—बड़े लोग आए थे। जो कपड़े और गहने मुझे मिले, वह मेरी सोच में भी कभी नहीं थे और मेरी ससुराल, उसका तो जवाब नहीं। मेरे सौंदर्य ने मुझे महारानी बना दिया। पति तो आज तक हमारी पहली मुलाकात को लेकर हँसते हैं, लोगों के सामने मजाक बनाते हैं। कुछ महीने यूँ ही बीते थे कि मेरे पति को एक विदेशी फर्म में नौकरी मिल गई। ससुर जी नहीं चाहते थे कि वह नौकरी करें क्योंकि उनका पुश्तैनी काम हीरे—जवाहरात का था और वह चाहते थे कि उनका बेटा उसे ही आगे बढ़ाए लेकिन पतिदेव अपने आप को खड़ा करने के लिए कोई सपोर्ट नहीं चाहते थे। इसी बीच सास ने एक रास्ता सुझाया कि बेटे—बहू दोनों को एक साथ भेज दें, जिससे बेटा अपनी नौकरी करे और बहू अपनी पढ़ाई। इस विचार ने

मेरे मन को खुश तो कर दिया पर मेरा शहर मुझसे छीन लिया। अब दो-चार साल में कभी आना हुआ भी, तो माँ और पिताजी सीधे दिल्ली आ जाते मिलने के लिए। इसी तरह साल बीतते गए।

पति अपने क्षेत्र के सूर्य, तो मैं अपने आप में कोहेनूर। बहुत सारे देश घूमे बहुत सारी नौकरियाँ कीं लेकिन अपने शहर जैसा कहीं नहीं...

होता भी कैसे, वहाँ 'वह' जो नहीं था। उसकी कपड़े की दुकान मेरे ही मोहल्ले में थी। मैं अपनेआप में मगन रहने वाली लेकिन रंग-बिरंगे दुपट्टों को देखकर मेरा मन ललचा जाता। महीने में कम से कम आठ-दस बार तो जरूर जाती थी उसकी दुकान पर, कभी कुछ खरीदने, तो कभी क्या नया आया है, यह देखने। धीरे-धीरे मैंने गौर किया कि वह कुछ ज्यादा ही अपनेपन से बातें करने लगा था, यह बताने के लिए कि मुझ पर क्या अच्छा लगेगा, क्या नहीं। उसकी दुकान का कोई नाम नहीं था, बस सफेद कागज पर कच्ची रसीद दे देता। एक बार रसीद देते वक्त उसने कागज के कोने पर अपना फोन नंबर लिख दिया। यह तब की बात है, जब मैं अपने रिश्तेदार के यहाँ शादी में जाने के लिए सलवार-कमीज लेने गई थी। मुझे पता नहीं चला पर जाने क्यों वह रसीद मेरे पास सुरक्षित थी। दिल में कुछ ऐसा होता था, जो पहले कभी नहीं हुआ। मैंने फोन नंबर को तवज्जो तो नहीं दी, फिर भी न जाने अब दुकान जाने पर उसकी ओर देखने में शर्म आती। जब तक मैं अपने दिल की धड़कनों की हलचल को समझती, मेरी शादी हो चुकी थी। मुझे शादी होने के बाद यह एहसास हुआ कि मैं क्यों शादी नहीं करना चाहती थी।

मेरी कम उम्र की शादी ने मेरा जीवन खुशियों से भर दिया। मेरा बेटा अब दस साल का हो गया पर हिंदी नहीं बोल पाता। इतने सालों बाद अपने शहर आना हुआ, तो उसे लेकर घूमने निकली। न चाहते हुए भी मुड़कर मैंने उसकी दुकान की ओर देखा, तो लिखा था 'अबरार क्लॉथ हाउस' और वह उसी तरह से बैठा था, जैसे सालों पहले बैठा करता था। बस चेहरे से उम्र पता चलने लगी थी और मुल्लाओं वाली दाढ़ी आ गई थी। सच! मेरा शहर वाकई बदल गया था...

डॉ कीर्ति अवस्थी

संपर्क-6386057470

जीवन की आपाधापी में

जीवन की आपाधापी में,
अब आज नहीं तो कभी नहीं
इसको मैंने अपनाया है।

संकल्प शक्ति ने रह-रह कर
मेरा विश्वास बढ़ाया है,

भूतल में रहकर निश्चय से
पग-पग दोचार कराया है।

जीवन की आपाधापी में
अब आज नहीं तो कभी नहीं
इसको मैंने अपनाया है।

संघर्ष शक्ति ने अवरोधों को
हौले से सरकाया है,

उम्मीदों और आशाओं ने
सहयोगी सा साथ निभाया है,

जीवन की आपाधापी में,
अब आज नहीं तो कभी नहीं
इसको मैंने अपनाया है।

— अनामिका शर्मा

TRACE ELEMENTS IN HUMAN BODY

The human body is composed of elements which can be divided into two categories : Macro minerals (abundant elements) and microminerals (trace elements). Abundant elements consist of the major elements and are important constituents of tissues (oxygen, carbon, hydrogen, nitrogen, etc.), and semi-major elements like: potassium, sodium, etc. Major elements account for 96% of the total body weight, and the semi-major elements account for 3 to 4% of the total body weight.



Deficiency of major elements can lead to nutritional disorders, and their presence in excess can cause obesity. Deficiencies or excess states of semi-major elements often result in water and electrolyte abnormalities. Essential trace elements of the human body include zinc (Zn), copper (Cu), selenium (Se), chromium (Cr), cobalt (Co), iodine (I), manganese (Mn), Iron (Fe) and molybdenum (Mo). These elements account for only 0.02% of the total body weight but they play significant role. Because of the presence of trace elements in very small amounts and the absence of specific clinical features associated with their deficiency, it is often difficult for clinicians to identify deficiencies of some particular trace elements.

Iron

Iron is an essential element for blood production. About 70 percent of body's iron is found in the red blood cells of blood called hemoglobin and in muscle cells called myoglobin. Hemoglobin is essential for transferring oxygen in your blood from the lungs to the tissues.

Function

Iron has several functions in the human body which include:

- As myoglobin stored in muscles
- An activating molecule of several enzymes
- Found in storage molecules such as ferritin and hemosiderin.
- One of the most important functions of iron is in heme synthesis, which forms haemoglobin(70%), a protein found in red blood cells. Haemoglobin's primary role is to transport oxygen from the lungs to body tissues to maintain basic life

functions.

- Our bodies need iron to convert food to energy. Iron plays a vital role in the process by which cells generate energy. Human cells require iron in order to convert biochemical energy from nutrients into ATP (Adenosine Triphosphate) from a multi-step process known as cellular respiration; ATP is the body's primary energy source. Without any iron no ATP can be produced, which is another reason why those lacking iron are easily tired and fatigued.
- Iron is necessary for immune cells proliferation and maturation, particularly lymphocytes, which are associated with helping us to keep healthy.
- Iron plays an important role in maintaining normal cognitive function. Cognitive function includes brain functions such as memory, attention (concentration), alertness, learning, intelligence, language, and problem solving.

Iron deficiency causes:

- Increased demand for iron, which the diet cannot fulfill.
- Increased loss of iron, through blood loss.
- A result due to a lack of dietary iron or consumption of foods that inhibit iron absorption.
- Inability to absorb iron: A common cause of iron deficiency is the widespread use of antacids.
- Damage to the intestinal lining. Eg. damage include surgery involving the duodenum, or diseases like [Crohn's](#) or [celiac sprue](#) which severely reduce the surface area available for absorption.

Sources of Iron

Meat, eggs, vegetables and cereals are all sources of iron. Haem and non-haem forms of iron are absorbed by different mechanisms. Haem iron is highly absorbed and averages 40% of the total iron in all animal tissues.

Excess quantities of Iron

Large amounts of free iron in the circulation will cause damage to critical cells in the liver, the [heart](#) and other metabolically active organs.

ZINC

This trace element is the only one that is found as an

essential component in enzymes from all six enzyme classes. Zinc promotes enzyme activity, supports immune function and aids in wound healing, DNA synthesis and cell division.

Function

Zinc is involved in 200 enzymatic reactions. It is a component of superoxide dismutase and prevents oxidative stress. It positively influences tissue growth and healing and participates in insulin formation and spermatogenesis.

Sources of Zinc

Foods containing zinc include meat, liver, eggs and seafood. Wholegrain products contain zinc in a less available manner. The best food sources for zinc are red meats, organ meats (for example, liver), shellfish, nuts, whole grains, and legumes. Many breakfast cereals are fortified with zinc.

Deficiency of Zinc

Zinc deficiency causes growth retardation, impaired immune functions, loss of appetite and skin, nail and hair change(white spots on nails),acrodermatites enteropathica(hair loss,diarrhoea,anorexia). The physiological signs of zinc deficiency include depressed growth; anorexia (loss of appetite); parakeratotic skin lesions; diarrhea; and impaired testicular development, immune function, and cognitive function. Pathological consequences of zinc deficiency include dwarfism, delayed puberty, failure to thrive , impaired wound healing, and increased susceptibility to infectious disease. It has also been suggested that low zinc status increases the susceptibility to osteoporosis and to pathological changes caused by the presence of excessive reactive oxygen species or [free radicals](#). The efficiency of zinc absorption is increased with low zinc intakes. The urinary loss of zinc is low and generally not markedly affected by zinc intake.

The recommended intakes of zinc for for adult males is 11 mg/day and for adult females is 8 mg/day.

Copper

Just a tiny amount of copper is essential for body. Copper is needed for various body functions, enzymatic, and metabolic processes both in adult and children. Copper combines with proteins to produce enzymes that can act as a catalyst and boost biological processes. Collagen is a protein important for elastin production in connective tissues of your skin and organs. As we are aware, lack of collagen means aging, wrinkled skin; so benefits of

copper include a smoother and healthier glow. Our body uses copper to produce enzymes needed to facilitate the production of energy. Copper deprivation in humans have been described primarily for premature and malnourished infants and include a hypochromic, normocytic, or macrocytic anemia; bone abnormalities resembling scurvy by showing osteoporosis, fractures of the long bones and ribs, epiphyseal separation, and fraying and cupping of the metaphyses with spur formation; increased incidence of infections; and poor growth. The consequences of the genetic disorder Menkes' disease (copper deficiency caused by a cellular defect in copper transport) in children include "kinky-type" steely hair, progressive neurological disorder, and death. Short-term human copper deprivation experiments; these include impaired brain development and teratogenesis for the fetus and children, and osteoporosis, ischemic [heart disease](#), cancer, increased susceptibility to infections, and accelerated aging for adults. As our body is unable to synthesize copper, it is necessary that we get enough of them from our diet.

Function

Copper is a constituent of many enzymes. It is also a constituent of many pigments and is important for immune functions.

Sources of Copper

Copper is found in organ meats, especially liver. It is also found in seafood, nuts and seeds. Many herbs have significant amount of copper that can be used as herbal remedies including burdock, Echinacea, and garlic. Foods with plenty of copper are mostly nuts and seeds, peanut butter, chocolate, mushrooms, ready-to-eat cereals as well as meat and fish.

Deficiency of Copper:

In exceptional circumstances, copper deficiency is seen in malnourished children and causes anaemia, bone demineralisation, impaired immunity, and lack of hair and nail growth.

The recommended intake of copper at 900 micrograms per day for adults.

Excess quantities of Copper:

Copper toxicity is not a major health issue. The ingestion of fluids and foods contaminated with high amounts of copper can cause nausea. Because their biliary excretion pathway is immature, accumulation of toxic amounts of copper in the liver

could be a risk for infants if intake is chronically high; this apparently caused cases of childhood liver cirrhosis in [India](#).

Selenium

Selenium is a component of enzymes that catalyze redox reactions. Although selenium was first suggested to be essential in 1957, this was not firmly established until a biochemical role was identified for selenium in 1972. The first report of human selenium deficiency appeared in 1979; the subject resided in a low-selenium area and was receiving total [parenteral nutrition](#) (TPN) after surgery. The subject and other selenium-deficient subjects on TPN exhibited bilateral muscular discomfort, muscle pain, wasting, and cardiomyopathy. Subsequently, it was discovered that Keshan disease, prevalent in certain parts of [China](#), was prevented by selenium supplementation. Keshan disease is a multiple focal myocardial necrosis resulting in acute or chronic heart function insufficiency, heart enlargement, arrhythmia, pulmonary edema, and death. Other consequences of inadequate selenium include impaired immune function and increased susceptibility to viral infections. Selenium deficiency also can make some nonvirulent viruses become virulent.

Recently, however, not only selenium deficiency, but effects of supranutritional intakes of selenium have become of great health interest. Several supplementation trials have indicated that selenium has anticarcinogenic properties. Eg.colorectal and prostate cancers.

Function

Selenium is present at the active site of glutathione peroxidase that catalyses the breakdown of hydroperoxides and prevents the damage caused by free radicals. Selenium combines with proteins in the body to form selenoproteins that act as antioxidants, compounds that protect cells from damage caused by negatively charged particles.

Sources of Selenium

Selenium is found in seafood, kidneys and liver. It is found in grains and other seeds. Food sources of selenium are fish, eggs, and meat from animals fed abundant amounts of selenium and grains grown on high-selenium soil.

Deficiency of selenium

A lack of Selenium will cause decreased lymphocyte numbers and natural killer activity and decreased interferon formation. It also causes Keshan's disease and Kashin Beck disease.

Adults should consume 55 micrograms of selenium per day.

Excess quantities of selenium:

Selenium is a relatively toxic element; Intakes averaging 1.2 mg/day can induce changes in nail structure. Chronic selenium intakes over 3.2 mg/day can result in the loss of hair and nails, mottling of the teeth, lesions in the skin and [nervous system](#), nausea, weakness, and diarrhea.

Selenium, which is biologically important as an anion, is homeostatically regulated by excretion, primarily in the urine but some also is excreted in the breath.

Chromium

Function

Chromium enhances the action of insulin, a hormone produced by the pancreas that regulates the breakdown of carbohydrates, fats and protein. A naturally occurring biologically active form of chromium called chromodulin has been described that apparently has a role in carbohydrate and lipid metabolism as part of a novel insulin-amplification mechanism. Chromodulin converts glucose into lipids and [carbon dioxide](#).

The nutritional importance of chromium is currently a controversial subject. Chromium deficiency has been suggested to impair glucose tolerance, which could eventually lead to diabetes. Supranutritional chromium supplementation (1,000 >g/day) has been found beneficial for some cases of type II diabetes. Supplements containing supranutritional amounts of chromium in the picolinate form have been promoted as being able to induce weight loss and to increase muscle mass. Chromium homeostasis is regulated by intestinal absorption, which is low. Estimates of absorption range from less than 0.5 to 2 percent. Absorbed chromium is excreted in the urine.

Deficiency of chromium

Some of the known causes of chromium [deficiency](#) include strenuous exercise, alcoholism and malnutrition. Others are:

1. Individuals do not eat enough foods that are rich in chromium; these foods include romaine lettuce, oysters, ripe tomatoes and raw onions.
2. The body cannot easily absorb chromium rich foods: only 0.4 to 2.5 percent is absorbed.
3. Intake of too much refined sugar leads to depletion of this mineral from the body.

4. Food processing destroys chromium.

People who have a diet that is rich in flours, refined sugars, processed foods and additives, as well as those who are under extreme stress and obese are at risk of having chromium deficiency due to the fact they such factors deplete chromium from the body.

Some of the chromium deficiency symptoms include frequent hunger, dizziness, cold sweats, irritability after six hours without food, cold hands, frequent urination, addiction to sweet foods, drowsiness during the day, need for excessive sleep, and excessive thirst.

Sources of chromium

Some of the best food sources of chromium are whole grains, pulses, some vegetables (for example, broccoli and mushrooms), liver, processed meats, ready-to-eat cereals, and spices. Chromium can be found in numerous foods such as cheese, whole-grain cereals, whole grain breads, mushrooms, oysters, rye bread, brewer's yeast, peas, wheat germ, potatoes, eggs, chicken, green peppers, butter, apples, Swiss cheese and parsnips.

Excess quantities of chromium

Chromium might affect brain chemistry and might make behavioral or psychiatric conditions worse. It might lower blood sugar levels too much if taken along with diabetes medications.

The amount of chromium your body needs depends upon age and gender. Adult men ages 19 to 50 need 35 micrograms, while those over the age of 50 need 30 micrograms per day. Women need slightly less -- 25 micrograms for those age 19 to 50, and 20 micrograms over the age of 50.

Cobalt

Cobalt the vital element of vitamin B12, is one of the essential trace elements that we need in body and works with the vitamin to form a compound called cobalamin. It is important to prevent anemia while assisting in red blood cell production, regulation of certain enzymes, as well as promoting a health nerve function. Our brain really needs this element as cobalamin maintains the protective 'sheet' covering your brain called meninges, repairing it whenever necessary.

Lack of cobalt also means a lack of vitamin B12, which sets up risk to get anemia, heart disease, diarrhea, and various nerve-

related dysfunctions. The [amount of cobalt](#) that is in foods is based on the amount of mineral that is in the soil where the food sources are grown or consumed.

Function

The activity and function of cobalt is essentially the same as vitamin B12, hence, meaning that cobalt plays a major role in the process of erythropoiesis, the process wherein erythrocytes or red blood cells are produced.

1. Vitamin B12. The association between [vitamin B12](#) and cobalt helps in the overall function of the body. Health enthusiasts found out that vitamin B12 is one of the B vitamins that aids in the performance of the nervous system and also affects the functioning of the other body systems as well as the metabolic processes of the body.

[Vitamin C](#)

2. Studies have shown that there is a great link between cobalt and vitamin C. The latter vitamin prevents certain conditions such as scurvy wherein scarcity of this mineral can lead to several symptoms such as hair loss. Humans need large amount of vitamin C in order to feel good and be well, and researchers have seen the role of cobalt in aiding the body makes use of the cocktails of vitamin C and other nutrients that was extracted from green vegetables, citrus fruits and other natural foods.
3. Iron Absorption. [Iron](#) is one of the most vital nutrients that are needed depending on gender, health conditions, and other factors. Nutritionists suggest that cobalt, together with other elements, can play a role in the body's absorption of iron.
4. Heart Health. Current research is working on how cobalt can affect some of the vascular systems that is related with cardiological function. The [Cobalt element](#) as well as others can provide stability to the cardiovascular process.

Deficiency of Cobalt

A deficiency in vitamin B12 is ultimately a cobalt deficiency, and vice versa. Proper intake of food or supplements rich in vitamin B12 can help alleviate the symptoms of deficiency.

Sources

Cobalt is found abundantly in all foods that are rich in B12 such as fish, meat, milk, and liver. As vegetables are lacking in this mineral, vegetarians may need to boost their cobalamin intake with B12 supplements. Herbs and root plants that also have cobalt are burdock, dandelion, fenugreek, ginger, and ginseng.

Excess quantities of Cobalt

Although it is essential to have sufficient amount of cobalt intake, it can be a disadvantage when this mineral is taken in excessively high levels. Having high amount of cobalt can decrease the fertility in men and affect the heart. When taken in a long periods of time, cobalt can cause over-production of red blood cells, and damage the heart muscles as well as the thyroid gland.

Health experts suggest that adults need around 1.5 µg of vitamin B12 daily; the daily B12 RDA is 2.4 µg for adults and adolescences. To date no Cobalt RDA has been established.

Magnesium

Magnesium is a key element in cellular metabolism, and its involvement in critical enzymes systems within the body is extensive. As an intracellular element, magnesium is needed for the activation of hexo-kinase, which is required in the conversion of glucose to glucose-6-phosphate. This is the first step in the glycolysis cycle involving carbohydrate metabolism. The requirement for magnesium continues into and through the function of the Krebs cycle and is involved in the convecoenzyme A. Magnesium is an important requirement for normal functioning of both anaerobic and aerobic metabolis. It is actually the fourth most required mineral in the body that is essential in having a good health.

Function

Adenosine triphosphate (ATP), which is the main source of energy in cells, needs to be bounded to a magnesium ion so that it can be biologically active. It also plays a vital role in all polyphosphate compounds stability in the cells, including those that are associated with the synthesis of DNA and RNA.

The bones alone are roughly composed of 50% total body magnesium and the remaining 50% is predominantly found in the cells of different organs and body tissues. One percent of magnesium can be found in the blood .It is also necessary in keeping nerve and muscle functioning normal and heart beat rhythmic. Aside from keeping the bones strong, other magnesium

benefits include supporting a healthy immune system. It also helps in regulating blood sugar levels which promotes normal blood pressure and supports protein synthesis and energy metabolism. It has a positive effect on treatment of certain disorders such as [diabetes](#), hypertension and cardiovascular diseases. [Dietary](#) magnesium is absorbed in the small intestine and is excreted through the kidneys.

Sources

Whole grains, sea vegetables and green leafy vegetables such as [spinach](#) and broccoli, are some of the major natural sources of magnesium. Other vegetables can also be considered as rich in magnesium sources include beet greens, lima beans, broad beans, tomatoes, sweet potatoes, artichoke, pumpkin seeds, buckwheat flour, wheat flour, peanuts, barley, oat bran, chocolate and cornmeal.

Other [magnesium rich foods](#) include dairy products like cheese, milk and yogurts. Other non-vegetarian goods such as fish, also contain certain amounts of the mineral. Vegetables that are magnesium rich include spinach and Black beans. Whole wheat bread that contains germ and bran are proven to have twice the magnesium content of white bread.

Deficiency of Magnesium

Some of the magnesium deficiency symptoms include fatigue, pain in neck and back, migraine attacks, anxiety, loss of appetite, muscle weakness and spasm, insomnia, nausea, abnormal heart rhythms, muscle twitching and diarrhea. One tends to use up much of the bodily magnesium when under stress. Chocolate cravings are one of the most common [symptoms of magnesium deficiency](#), as chocolate is highly rich in the mineral. Deficiency of magnesium is related to depression, diabetes and [menopausal problems](#).

Benefits of Magnesium

There are numerous health benefits of magnesium that include maintaining bodily nerves, bones and muscles. It also aids in cellular metabolism and protein synthesis. Magnesium is a vital mineral essential in sustaining the normal heart beat, which is why doctors use this in treating irregular heart rhythm. Magnesium also prevents certain diseases from occurring such as eclamptic seizures, asthma, diabetes, osteoporosis, constipation, psychiatric disorders and back pain. It also plays a major role in helping the human body absorb [calcium](#) for the formation and strengthening

of bones and teeth. Magnesium is related directly to the bone density. Insufficient amount of this mineral can lead to osteoporosis. It is also involved in aiding the regulation of calcium levels in the body along with [copper](#), [vitamin D](#), [zinc](#), etc. One of the benefits of magnesium supplements is related to that of Chronic [asthma](#) patients; they may be able to normalize their breathing by taking in magnesium supplements as the mineral can help in relaxing bronchial muscles whilst normalizing one's breathing. Correct intake of magnesium supplements during pregnancy is vitally important as it can reduce the risk of osteoporosis and increases the level of pain tolerance; thus aiding in a smooth delivery process as well as in the optimization of blood pressure. Expectant mothers who have hypertension are often treated with magnesium sulfate to help prevent eclamptic seizures.

Functions

- Magnesium is essential for all biosynthetic processes including glycolysis, formation of cyclic AMP, energy dependent membrane transport and transmission of the genetic code.
- Greater than 300 enzymes are known to be activated by magnesium ion.
- Magnesium is also required for maintenance of electrical potentials of nerve and muscle and for the transmission of signals across neuromuscular junctions.

Source of Magnesium

Magnesium is found in green leaves, potato, nuts, legumes and whole grains.

Deficiency of Magnesium

Purely dietary magnesium deficiency has not been reported in people consuming natural diets.

Magnesium deficiency can be caused by:

- Gastrointestinal losses (vomiting, diarrhoea)
- The urinary system (Cushing's syndrome, osmotic diuresis, diuretics)

Clinical features of reduced levels of sodium include irritability, muscle weakness, paralysis and impaired heart function.

Manganese

Manganese (Mn) is a mineral element that is nutritionally important in the body yet is potentially toxic. It is present in the

body in tiny amounts and is commonly found in bones, kidneys, liver and pancreas. This [essential mineral](#) aids the body in forming connective tissues, blood clotting hormones, bones, and sex hormones. Manganese also plays a role in the metabolism of [carbohydrates](#) and fat as well as the absorption of calcium and blood sugar regulation. Health experts have found out that manganese is also required in having normal nerve and brain function. Despite being a trace mineral, manganese plays huge roles in regulating and carrying out various biological functions. Particularly to children, manganese is essential for proper growth and development but, too much of it can delay motor skills and cognitive development. It assists in metabolizing fat and carbohydrate as well as calcium absorption and utilizing vitamin B1 and E.

Sources

Kidneys and livers are the primary meat source of manganese. Other manganese rich foods include wheat germ, wheat bran, oyster, rolled oats, cheese, fish, cereals, soybeans, cottage cheese, parsley, turkey, pulses, black tea, legumes, nuts, berries, white bread, mushrooms, potatoes, pasta, whole milk, chicken, turkey, almonds, pineapple, spinach, sweet potatoes and fruits. Apart from manganese found in foods, use of herbal products containing manganese such as burdock, chamomile, lemongrass, and peppermint should also be considered to maintain the benefits from this mineral.

Deficiency of Manganese

1. Deficiency of manganese results in having abnormal skeletal developments.
2. Several manganese-activated enzymes have significant roles in the metabolism of cholesterol, amino acids and carbohydrates.
3. The main antioxidant enzyme in the mitochondria is the Manganese superoxide dismutase (MnSOD) that is responsible in catalyzing the conversion of superoxide radicals to hydrogen peroxide that can be reduced by other antioxidant enzymes into water.
4. Wound healing is a complex process that is need of an increased collagen production. Manages is essential for the activation of the enzyme prolidase that functions in providing proline (an amino acid) for the formation of collagen in human skin cells.

-
-
5. Insufficient consumption of manganese can result to deficiency symptoms such as fainting, ataxia, weak ligaments and tendons, hearing loss, and can also be a possible cause of diabetes. Recent studies have indicated that [manganese deficiency](#) also impairs the metabolism of glucose and reduced production of insulin. Myasthenia gravis is another disease that has been linked to manganese deficiency.

Excess quantities of Manganese

Neurological disorders such as Parkinson's disease are associated with having abnormal manganese concentrations in the brain, particularly in the basal ganglia. Infant or young kids' exposure to high levels of manganese can have severe impact on neurodevelopment. Poor cognitive performances among school children can also arise due to elevated manganese in the body.

Recommended doses are 1.8 mg/day in females and 2.3 mg/day in males

Molybdenum

Molybdenum (Mo), an important trace mineral for all living organisms, functions as a cofactor for numerous enzymes that catalyze vital chemical transformations in the nitrogen and sulfur cycles.

Deficiency of Molybdenum

The only known event of acquired [molybdenum deficiency](#) happened in a patient diagnosed with Crohn's disease on long-term total parenteral nutrition (TPN), wherein molybdenum was not added to the TPN solution. Headache, night blindness, rapid heart and respiratory rates, and ultimately became comatose were the known molybdenum deficiency symptoms developed by the patient. He had also demonstrated molybdenum deficiency biochemical signs such as decreased urinary excretion of uric acid and sulfate, low plasma uric acid levels, and increased urinary excretion of sulfite. The clinical condition of this patient improved and showed the disappearance of amino acid intolerance when he was supplemented with molybdenum (160 mcg/day) and the TPN solution was discontinued. Similar [mineral deficiency symptoms](#) have been observed in children who are known to have molybdenum cofactor deficiency.

Sources

Some of the major molybdenum food sources include

legumes such as lentils, peas, and beans (these are the highest sources of this trace mineral), while nuts and grain products are known to be molybdenum rich foods. Due to the fact that plants molybdenum content depends upon the molybdenum content of the soil and other conditions in the environment, the content of this mineral in foods can vary considerably.

Excess quantities of Molybdenum

Molybdenum toxicity appears to be very low in humans. However, possible symptoms include seizures, hallucinations, and other neurologic symptoms; these can occur when taken in very large doses.

Recommended doses are 45 micrograms per day.

Iodine

This trace element has one known function in higher animals and humans; it is a constituent of thyroid hormone (thyroxine, T₄) that, after conversion to triiodothyronine (T₃), functions as a regulator of growth and development by reacting with cell receptors, which results in energy ([adenosine triphosphate](#), ATP) production and the activation or inhibition of synthesis of specific proteins. It is also used for the production of thyroxine, thyroxine and other hormones by the thyroid gland that in return regulates the body's conversion of [fats](#) into energy, controlling cholesterol levels and stabilizing the weight of the body.

Function

Iodine is a major component of thyroid hormones. Recognition that iodine was nutritionally important began in the 1920s when it was found that iodine prevented goiter, and increased iodine intake was associated with decreased endemic cretinism, the arrested physical and mental development caused by the lack of thyroid hormone. Briefly, the spectrum of iodine deficiency disorders is large and includes fetal congenital anomalies and perinatal mortality; neurological cretinism characterized by mental deficiency, deaf mutism, spastic diplegia (spastic stiffness of the limbs), and squint; psychomotor defects; goiter; and slowing of the metabolic rate causing fatigue, slowing of bodily and mental functions, weight increase, and cold intolerance.

Some of the [health benefits of iodine](#) include:

1. Used as a general sterilizing agent.

-
-
2. The compound [potassium](#) iodide is used in helping individuals who have been exposed to radiation by means of reducing the accumulation of harmful radioactive substances in the thyroid.
 3. Boosting metabolism. Iodine can also help in steadying the heart rate, keeping the body warm, promoting overall digestive health, and maintaining a healthy body weight.
 4. Goiter prevention.
 5. An iodine solution is known in assisting the body's fight against conjunctivitis and other bacterial infections. Iodine tonic that is used as a throat gargle helps in treating cough, and can also be used as an expectorant of mucus for flu and colds.
 6. Recent studies have shown the direct relation of ovarian problems, such as cysts, and iodine deficiency; and reproductive ability.
 7. Iodine is a key mineral in breast milk that is being passed on to infants to promote growth and development.
 8. Individuals can suffer from mental disabilities and illnesses due to lack of iodine.

Sources

[Iodized salt](#) has been the major method for assuring adequate iodine intake since the 1920s. Iodine is naturally found in rock, some types of soil and most especially in seawater. Foods that are highly rich in iodine include shellfish and sea fish. Some other food sources include seaweeds (especially dulse), asparagus, lima beans, garlic, mushrooms, sesame seeds, spinach, soybeans, swiss chard, summer squash, and turnip greens. It can also be found in foods such as grains and cereals but the amount is dependent on the level of iodine in the soil where it is planted and grown. Another very important source of iodine is sea salt.

Deficiency of Iodine

A lack of Iodine will cause a variety of conditions including cretinism, goitre, miscarriages, still births of children and mental retardation

The recommended intakes of iodine for adults is 150>g/day.

Excess quantities of Iodine

Overdosing of iodine on the other hand, can result to alteration of the function of the thyroid gland. This can cause a variety of symptoms that include excessive weight gain.

Table : Trace Elements and the Potential Effects of Replenishment, Prophylaxis, and Pharmacological Effects

Trace elemen	Potential effects of replenishment, prophylaxis, and pharmacological effects
Iron	Correction of latent iron deficiency resistance to infections
Zinc	Wound healing Improved resistance to infections and immune functions Correction of developmental retardation and gonadal hypoplasia Correction of taste disorder
Chromium	Correction of carbohydrate metabolism Prevention of atherosclerosis
Selenium	Anti-cancer activity Prevention of ischemic heart disease Vitamin E-like activity
Fluorine	Prevention of dental caries
Iodine	Correction of latent iodine deficient goiter

-Dr. Induja Dixit

Ph.D. Nutrition

Nutritionist Charak Hospital

अग्नि और संकल्प

विषम स्थितियों में अपना संकल्प और मनोबल अग्निशिखा की तरह ऊँचा ही रखें। अग्नि जब तक जीवित है, उष्णता एवं प्रकाश की अपनी विशेषताएँ नहीं छोड़ती। उसी प्रकार हमें भी अपनी गतिशीलता की गर्मी और धर्म-परायणता की रोशनी घटने नहीं देनी चाहिए। जीवन भर पुरुषार्थी और कर्त्तव्यनिष्ठ बने रहना चाहिए। यज्ञाग्नि का अवशेष भस्म मस्तक पर लगाते हुए हमें सीखना होता है कि मानव जीवन का अन्त मुट्ठी भर भस्म के रूप में शेष रह जाता है। इसलिए अपने अन्त को ध्यान में रखते हुए जीवन के हर पल के सदुपयोग करें।

दैनिक स्वर्गलोक समाचार

स्वर्गलोक की आत्माओं में रोष
वैकुण्ठ से मुख्य संवाददाता- नारद

कल सायं भारतखण्ड की सरकार द्वारा एक साधारण मानुष को 'शाही श्मशान' में स्थान देने के निर्णय से स्वर्गलोक में शाही आत्माओं में विषाद और क्रोध की लहर दौड़ गई। भूलोक वासियों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि आत्माओं में भी यह अनुभूतियाँ शेष रह जाती हैं। उन्हें तो कृष्ण ने सिखाया था कि "आत्मा में न कोई हर्ष है न विषाद, न जन्म न मृत्यु, वहाँ केवल शांति है, मात्र शांति"। उनका गीता पर अटूट विश्वास है। परंतु कृष्ण ने उनको यह तो बताया ही नहीं कि यह सब पराभौतिक नियम साधारण आत्माओं के लिए हैं। वी वी आई पी आत्माएं इन सब नियमों से परे हैं।

इन क्षुब्ध आत्माओं ने बाकी सब आत्माओं को अपने पक्ष में कर पूरे स्वर्गलोक में हलचल फैला दी है। वह मर्त्यलोक से अपने पार्थिव अवशेषों को पृथ्वी से हटा कर स्वर्गलोक लाना चाहती हैं। उनकी दलील है कि, जब युधिष्ठिर अपने और अपने श्वान के पार्थिव शरीर के साथ स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है, तब हम अपने शरीर के अग्नि से पावन हुए भस्मीभूत अवयवों को अपवित्र होने से बचाने हेतु स्वर्ग क्यों नहीं ला सकते?

समाचार लिखने तक सूचना है कि 'शाही आत्माएं' अपने अवयवों को लाने हेतु भारतखंड के देहली नगर स्थित राजघाट स्थल के लिए निकल चुकी हैं। स्वर्गलोक के अधिष्ठाता यमदेव ने स्वर्गलोक का दरवाजा फिलहाल बंद कर रखा है।

यदि यह शाही परिवार अपने अवयवों को स्वर्ग में लाने में सफल हो जाता है तो पूरी संभावना है कि नेपोलियन, हिटलर और चर्चिल आदि की आत्माएं भी ऐसा ही अनर्थ करने पर उद्यत हो सकती हैं।

फिलहाल स्वर्ग में इस समय बड़ी गहमागहमी है। आगे हरि इच्छा— नारायण, नारायण । छपते—छपते— ज्ञात हुआ है साधारण परिवार में जमे प्रधान सेवक की आत्मा स्वर्ग लाई जा चुकी है। स्वर्ग की आंदोलित आत्माओं ने अपना गुस्सा उस नवांगंतुक आत्मा पर उतार कर उसके ऊपर खूब 'रैगिंग' करी। उसे 'आंगंतुक हाल' (रिसेप्शन हाल) के एक दूरस्थ कोने में में बैठने को विवश कर रखा है।

वह अटल आत्मा वहाँ निर्भीक बैठी हुई उच्च स्वर में गा रही है

**"हार नहीं मानूँगा, रार नहीं ठाँऊगा,
यही इस हाल के कपाल पर ही, ठौर बनाऊँगा,
गीत नया गाऊँगा, गीत नया गाऊँगा"**

संपादक—चित्रगुप्त, मुख्य संवाददाता देवर्षि नारद
मुद्रक एवं लिपिक— लंबोदर विनायक, मुद्रक— वाग्देवी शारदा
स्वामित्व— सम्पूर्ण स्वामित्व श्री हरि के अधीन श्रावण शुक्ल, सप्तमी संवत्
2075 तदनुसार 17 अगस्त 2018 ईस्वी

अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा

एवं यशस्वी पत्रिका

कान्यकुब्ज वाणी

को

होली व नव संवत्सर

की

हार्दिक शुभकामनाएँ

मे० अंजलि ट्रेडर्स

प्र० अजय कुमार सिंह

कांट्रैक्टर श्रेणी-A A, सिंचाई विभाग

छबैला, पो० बहादुरपुर,

जिला- बस्ती

मो० 9415123143

कान्यकुब्ज वाणी आभा मण्डल

संरक्षक

अनुदान—रु0 10000.00 मात्र

1. न्यायमूर्ति श्री डी0के0 त्रिवेदी (अव.प्रा.) लखनऊ । 9415152086
2. श्रीमती नीरा शर्मा पत्नी डा0 राजीव शर्मा, आई.ए.एस. 9810722663
3. डा0 राजीव शर्मा, आई.ए.एस.

वाणी पुत्र

अनुदान रु0 5000.00

1. डॉ0 यू0डी0 शुक्ल (स्व0), लखनऊ
2. डॉ0 वी0के0 मिश्र, लखनऊ । 9415020426
3. इं0 एम0एन0 मिश्रा, लखनऊ । 9453945400
4. श्री ललित कुमार बाजपेयी, रायबरेली । 9415034368
5. श्री उदयन शर्मा
6. श्री प्रमोद शंकर शुक्ल, रायबरेली । 9450558657
7. श्रीमती रोली तिवारी । 9839882742

अति विशिष्ट सदस्य

अनुदान रु0 3000.00

1. श्री रामजी मिश्र, सीतापुर । 9450379054
2. इं0 देवेश शुक्ल, लखनऊ । 9450591538
3. आर्किटेक्ट अनुराग शुक्ल, लखनऊ । 9415580950

विशिष्ट सदस्य

अनुदान रु0 2000.00

1. श्री सूर्य प्रकाश बाजपेयी । 9335159363
2. श्री उपेंद्र मिश्र, लखनऊ । 9415788855
3. डा0 आर0एस0 बाजपेयी
4. डा0 आर0के0 मिश्र । 9415012333
5. पं0 विनोद बिहारी दीक्षित (स्व0)
6. पं0 विजय शंकर शुक्ल (स्व0) लखनऊ
7. डी0के0 बाजपेयी, लखनऊ । 9621479044
8. प्रो0 पी0पी0 त्रिपाठी, बलरामपुर । 9450551394
9. डा0 प्रांजल त्रिपाठी, बलरामपुर । 9919879799

-
-
- | | |
|---------------------------------------|------------------------|
| 10. डा0 निधि त्रिपाठी, बलरामपुर | |
| 11. डा0 बी0एन0 तिवारी, आई0ए0एस0, लखनऊ | |
| 12. श्रीमती सुमन शुक्ला, लखनऊ | |
| 13. मीरा शिवेन्दु शुक्ल, कानपुर । | 9721756269 |
| 14. इं. लक्ष्मी कान्त शुक्ल, लखनऊ । | 9839646116 |
| 15. पी.के. दीक्षित, लखनऊ । | 7905913042, 9838922347 |

आजीवन सदस्य

अनुदान रु0 1000.00

- | | |
|---|--------------|
| 1. श्री जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी, लखनऊ । | 9307222027 |
| 2. पं0 भारतेन्दु त्रिवेदी, सीतापुर । | 9451194337 |
| 3. श्री राधा रमण त्रिवेदी, सीतापुर | |
| 4. श्री के0के0 त्रिवेदी, लखनऊ । | 9415020510 |
| 5. श्री आर0सी0 त्रिपाठी, लखनऊ । | 9415012040 |
| 6. श्री नवीन कुमार शुक्ल, लखनऊ । | 950666731 |
| 7. श्रीमती मीनू द्विवेदी, कानपुर । | 9336166380 |
| 8. इं0 बसंत राम दीक्षित, लखनऊ । | 9335075482 |
| 9. श्री सुधीर कुमार पांडे, लखनऊ । | 9415521031 |
| 10. श्रीमती अर्चना तिवारी, लखनऊ । | |
| 11. एडवो0 कू0 प्रेम प्रकाशिनी मिश्र, लखनऊ । | 9415026087 |
| 12. श्री अनिल कुमार त्रिपाठी, सीतापुर । | 9415524848 |
| 13. ब्रिगेडियर सीतांशु मिश्र, लखनऊ । | 9454592411 |
| 14. श्री कृपा शंकर दीक्षित, लखनऊ । | 9455713711 |
| 15. डा0 अनुराग तिवारी, कानपुर । | 9415735630 |
| 16. श्री आर0के0 शुक्ल, लखनऊ । | 9919623121 |
| 17. डा0 आर0सी0 मिश्र, लखनऊ । | 0522 6521353 |
| 18. श्री विनोद कुमार मिश्र, उन्नाव । | 9919740633 |
| 19. श्री राजकिशोर अवस्थी, लखनऊ । | 9956084970 |
| 20. डा0 पी0एन0 अवस्थी, लखनऊ । | 9415308555 |
| 21. श्री कौशल किशोर शुक्ल, लखनऊ । | 9335968454 |

22. श्री विनय कुमार शुक्ल, रमा बाई नगर ।	9450350878
23. श्री मनी कान्त अवस्थी, लखनऊ ।	7607479838
24. श्रीमती अनुराधा शुक्ला, रायबरेली	
25. इं. के०बी० शुक्ल, लखनऊ ।	9415004466
26. श्रीमती हेमा दिनेश मिश्रा, लखनऊ ।	9721975102
27. श्री ब्रह्म शंकर दीक्षित, लखनऊ ।	9415049660
28. श्री शंभु प्रसाद पांडे, लखनऊ ।	9450717711
29. ई० एस०एस० शुक्ल, लखनऊ ।	9450761403
30. श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी	
31. श्री ज्ञान सिंधु पांडे, लखनऊ ।	8765531281
32. श्री डी०एन० दुबे, आई०ए०एस०, लखनऊ ।	9415408018
33. श्री श्रीकांत दीक्षित, लखनऊ ।	9415766901
34. उमेश चंद्र मिश्र, लखनऊ ।	9305245599
35. डा० ओंकार नाथ मिश्रा, लखनऊ ।	9415022957
36. श्री अश्वनी कुमार शुक्ल, फतेहपुर	
37. श्री राघवेंद्र मिश्र, लखनऊ ।	9918001628
38. प्रफुल्ल कुमार पाठक, रायबरेली ।	7388192190
39. श्री आत्म प्रकाश मिश्र, लखनऊ ।	9415018200
40. श्री समीर बाजपेयी, इलाहाबाद ।	9415306363
41. श्री राकेश कुमार मिश्र, लखनऊ ।	9335209896
42. डा० एस०के० त्रिपाठी, लखनऊ ।	9335917261
43. श्री राजेश नाथ मिश्र, लखनऊ ।	9454292354
44. मालती विजय शंकर मिश्रा, लखनऊ ।	9336704017
45. राम कृपाल त्रिपाठी, लखनऊ	
46. सुरेन्द्र नाथ त्रिवेदी, लखनऊ ।	9335230767
47. राकेश कुमार शुक्ल, लखनऊ ।	9005409001
48. विमल कुमार जेटली, लखनऊ—	9451246381
49. श्री एस.के. मिश्रा लखनऊ	

50. डॉ. परेश शुक्ल, लखनऊ ।	9793346656
51. डॉ. एस.एन. शुक्ल, आई.ए.एस., लखनऊ ।	9415464288
52. डॉ. राकेश शुक्ला, (न्यूरोफिजीशियन), लखनऊ ।	0522 2235581
53. सर्वेश मिश्रा, लखनऊ ।	9086761122

बाहरी प्रांतों के सदस्य

1. डा० आर०के० त्रिपाठी, देहरादून, उत्तराखण्ड ।	9935478815
2. यतीन्द्र कुमार दीक्षित, दिल्ली ।	9818434377
3. राम अवस्थी, ट्रांबे, मुंबई ।	9820026914
4. नीरज त्रिवेदी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड	9837077546
5. अशोक कुमार तिवारी, जबलपुर म०प्र०	9300104481
6. अशोक कुमार पाठक, होशंगाबाद ।	9407290639
7. वैज्ञानिक अलका दीक्षित, दिल्ली	
8. श्रीमती सविता दुबे, धारवाड, कर्नाटक	
9. देवेन्द्र कुमार शुक्ला, जयपुर, राजस्थान ।	9414075174
10. पं० शिव शंकर तिवारी, सिकंदराबाद, आंध्र प्रदेश	
11. शिशिर कुमार बाजपेई, फरीदाबाद हरियाणा	9899041178
12. प्रदीप चंद्र तिवारी, जयपुर ।	9414097679
13. डॉ. अश्वनी कुमार बाजपेई, छतरपुर, मध्यप्रदेश ।	
14. अनामिका शर्मा, नई दिल्ली ।	09990455986

दूरस्थ देश के सदस्य

अतिविशिष्ट सदस्य

1. जितेन्द्र पाण्डेय, अफ्रीका	9638145145
-------------------------------	------------

आजीवन सदस्य

2. विजय शुक्ला द्वारा गिरीश चन्द्र शुक्ला, सिडनी	
--	--

श्रंगारिक अर्क (सूर्य)

तेजोमय सूर्य को नित्य जागते ही समस्त ब्रह्मांड की प्रदक्षिणा हेतु निकलना पड़ता है। दिन भर के परिश्रम से क्लांत सूर्य संध्या की गोद में सो जाता है। आश्चर्य है कि सूर्य सोता तो संध्या की गोद में, किन्तु आने वाले प्रभात को वह उठता उषा की गोद से।

सच है द्विभार्या योग रात में भी विश्राम नहीं करने देता।

कार्यकारिणी अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा

अध्यक्ष



न्यायमूर्ति डी०के० त्रिवेदी

महासचिव



उपेन्द्र मिश्र
एडवोकेट

कोषाध्यक्ष



ए० के० त्रिपाठी
एडवोकेट

उपाध्यक्ष



जे० के० त्रिपाठी
संस्कृत मातृ भाषी

उपाध्यक्ष



पी० एन० मिश्रा
एडवोकेट

उपाध्यक्ष



डा० आर० के मिश्रा
आर्थी सर्जन

उप मंत्री



के० एस० दीक्षित
आडीटर

सचिव महिला प्रकोष्ठ



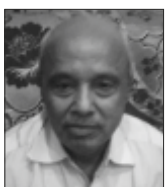
कु० प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा
एडवोकेट

सदस्य



जी० एस० मिश्र
स्थायी अधिवक्ता

सदस्य



हरेन्द्र कुमार मिश्रा
उप लेखाधिकारी

सदस्य



आर. पी. अवस्थी
एडवोकेट

सदस्य



डा. वी.के. मिश्रा
आई सर्जन

सम्पादक मण्डल

सम्पादक



डा० डी० एस० शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

सह-सम्पादक



डा० अनुराग दीक्षित
अपोलो अस्पताल, लखनऊ

नव संवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

उचित मूल्य पर विश्वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

भारत मेडिसिन कम्पनी

शहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखनऊ

विशेषता :

जो दवाएँ शहर की अन्य दुकानों पर
उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।

दूरभाष : 9336666322, 0522-6568011
पंडित जी (तिवारी जी) का अंग्रेजी दवाखाना

होली मिलन समारोह 2019 को मुख्य अतिथि के कर कमलों से मंच पर वितरित पारितोषिक

1. स्व. पं. आर.के. मिश्र 'मान भाई' पारितोषिक प्रदत्त रु. 5000/-
ब्रिगेडियर शीतांशु मिश्र (अ.प्रा.), कु. प्रगति त्रिपाठी पुत्री
श्री निर्मल त्रिपाठी, कक्षा-7, ब्राइट कैरियर स्कूल, दुबग्गा,
लखनऊ
2. स्व. ब्रिगेडियर छंगा लाल पाण्डे पारितोषिक, कु. रोली रु. 2100/-
शुक्ला पुत्री श्री रविशंकर शुक्ल, कक्षा बी.ए. तृतीय वर्ष,
कृष्णा देवी गर्ल्स डिग्री कालेज, आलमबाग, लखनऊ
3. स्व. कु. सोनल मिश्र पारितोषिक प्रदत्त आर्थो सर्जन आर.
के. मिश्र, कु. श्वेता मिश्रा पुत्री श्री दीपक कुमार मिश्र, कक्षा रु. 3000/-
बी.ए. प्रथम वर्ष, लाला महादेव प्रसाद वर्मा महाविद्यालय,
गोसाईगंज
4. स्व. श्री राज किशोर तिवारी पारितोषिक प्रदत्त श्री राम
कृपाल त्रिपाठी, कु. आयुषी तिवारी पुत्री श्री प्रेमशंकर रु. 3000/-
तिवारी, कक्षा 10, यशोदा रस्तोगी गर्ल्स इंटर कॉलेज
अशर्फाबाद
5. स्व. श्रीमती कृष्णा तिवारी पारितोषिक प्रदत्त श्री राम रु. 3000/-
कृपाल त्रिपाठी, कु. सृष्टि बाजपेई पुत्री श्री अम्बुज कुमार
बाजपेई कक्षा 9, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इं. कॉलेज
6. स्व. श्री उमाशंकर बाजपेई पारितोषिक प्रदत्त श्री रु. 2200/-
आशुतोष बाजपेई कु. लाडो द्विवेदी पुत्री श्री विनोद कुमार
द्विवेदी, कक्षा 7, कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय, बाराबंकी
7. स्व. श्रीमती विनोदिनी बाजपेई पारितोषिक प्रदत्त श्री रु. 2200/-
आशुतोष बाजपेई, कु. शुभी मिश्रा पुत्री श्री प्रमोद शंकर
मिश्र, कक्षा 8, श्री काशीश्वर इं.का., मोहन लालगंज
8. स्व. रायबहादुर उदित नारायण पाठक आफ सिसेन्डी रु. 2200/-
पारितोषिक प्रदत्त श्रीमती दिव्या बाजपेई, कु. स्वाती
पाण्डेय पुत्री श्री यदुनन्दन पाण्डेय, कक्षा 7, बी.एस.एन.वी.
गर्ल्स इंटर कॉलेज
9. स्व. श्री ज्ञानेन्द्र प्रसाद शुक्ल आफ सरकुटिया स्टेट रु. 2200/-
पारितोषिक प्रदत्त श्रीमती दिव्या बाजपेई, कु. शिखा
त्रिपाठी अभिभावक श्री राजेश तिवारी, कक्षा 10, बी.एस.
एन.वी. गर्ल्स इंटर कॉलेज
10. स्व. श्रीमती शैल शुक्ला आफ नाटोर पारितोषिक प्रदत्त रु. 2200/-

- श्रीमती दिव्या बाजपेई, कु. प्राची शुक्ला पुत्री श्री अशोक शुक्ल, कक्षा 11, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इं. कालेज
11. स्व. डा. विष्णु कुमार मिश्र पारितोषिक प्रदत्त आर्थोसर्जन रु. 2000/-
आर.के. मिश्र, कु. रजनी तिवारी, अभिभावक श्री मन्मू, कक्षा 11, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इं. कालेज
 12. श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक II प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं. रु. 1100/-
जयशंकर त्रिवेदी, कु. निहारिका मिश्रा पुत्री श्री वेदरत्न मिश्र, कक्षा बी.ए. प्रथम वर्ष, नारी शिक्षा निकेतन पी.जी. कॉलेज
 13. स्व. श्रीमती रामा देवी (भाभी जी) पारितोषिक प्रदत्त श्री रु. 1100/-
हरेन्द्र कुमार मिश्र, कु. अंकिता शुक्ला पुत्री श्री गोविन्द प्रसाद शुक्ल, कक्षा 9, विष्णुनगर शिक्षा निकेतन कं. इं.का.
 14. श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक I प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं. रु. 1000/-
जयशंकर त्रिवेदी, कुशाग्र मिश्र पुत्र श्री पंकज मिश्र, कक्षा 11, संत जेवियर इं. कालेज, बख्शी का तालाब, लखनऊ
 15. स्व. श्रीमती दुर्गावती त्रिवेदी पारितोषिक प्रदत्त स्व. न्याय रु. 1000/-
मूर्ति पं. जयशंकर त्रिवेदी, कु. अंजली शुक्ला पुत्री श्री शिवशंकर शुक्ल, कक्षा 12, लाला.जी.पी. वर्मा बा. इं. कॉलेज, गोसाईगंज
 16. स्व. श्रीमती विदेश्वरी देवी पारितोषिक प्रदत्त डा. सुरेन्द्र रु. 1000/-
नाथ द्विवेदी, कु. स्मृति मिश्र पुत्री श्री हरीश कुमार मिश्र, कक्षा 7, विष्णुनगर शिक्षा निकेतन कं. इं.का., खुर्शेदबाग
 17. स्व. श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक I प्रदत्त डा. एल. रु. 1000/-
पी. मिश्र सी. एडवोकेट, कु. मनाली बाजपेई पुत्री श्री संतोष कुमार बाजपेई कक्षा-9, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इं. का.
 18. स्व. श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक II प्रदत्त रु. 1000/-
डा. एल.पी. मिश्र सीनियर एडवोकेट, कु. प्रतिमा बाजपेई पुत्री श्री अनिरुद्ध कुमार बाजपेई, कक्षा-10, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इं. कालेज
 19. स्व. श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक III रु. 1000/-
प्रदत्त डा. एल.पी. मिश्र सी. एडवोकेट, कु. रोशनी शुक्ला पुत्री श्री जी.पी. शुक्ला, कक्षा-7, कस्तूरबा बा. वि.इं. कालेज
 20. स्व. श्री जयशंकर मिश्र पारितोषिक प्रदत्त, कु. प्रेम रु. 1000/-
प्रकाशिनी मिश्र, एडवोकेट हाईकोर्ट, कु. आयुषी पाण्डेय पुत्री श्री कैलाश चन्द्र पाण्डेय, कक्षा 9, विष्णुनगर शिक्षा निकेतन कं. इं.का., खुर्शेदबाग

21. स्व. श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक ॥ प्रदत्त श्री ज्ञान रु. 750/-
बाजपेई, कु. रिषिता पाण्डेय पुत्री श्री हरिप्रकाश पाण्डेय,
कक्षा 5, केन्द्रीय विद्यालय, अलीगंज
22. स्व. न्यायमूर्ति पं. जयशंकर त्रिवेदी पारितोषिक प्रदत्त रु. 1000/-
न्यायमूर्ति श्री दिनेश कुमार त्रिवेदी (अ.प्रा.), कु. विशाखा
दीक्षित पुत्री श्री गोमती प्रसाद दीक्षित, कक्षा 8, बी.एस.
एन.वी. जूनियर, हाईस्कूल
23. स्व. श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक । प्रदत्त स्व. न्याय रु. 1000/-
मूर्ति पं. जयशंकर त्रिवेदी, कु. आर्या शुक्ला पुत्री श्री सोम
दत्त शुक्ल, कक्षा 12, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इ.का.
24. स्व. श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक ॥ प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति रु. 1100/-
पं. जयशंकर त्रिवेदी, कु. रीतिका बाजपेई पुत्री श्री
भानुशंकर बाजपेई, कक्षा 6, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इ.का.
25. स्व. श्री विशम्भर नाथ त्रिवेदी पारितोषिक प्रदत्त श्री रवि रु. 1100/-
त्रिवेदी, कु. प्रगति मिश्रा पुत्री श्री वेदरत्न मिश्र, कक्षा 6,
मातेश्वरी विद्यालय इ.का., इटौजा

विशेष अनुदान जिसके लिए अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा आभारी है

1. कान्यकुब्ज शिरोमणि श्री नवीन चन्द्र बाजपेयी आई.ए.एस. रु. 11000.00
2. कान्यकुब्ज शिरोमणि डा. राकेश शुक्ला न्यूरोफिजीशियन रु. 11500.00
3. वाणी पुत्र डॉ. वी.के. मिश्रा, आई सर्जन रु. 5000.00

साइकिल व स्टेशनरी पाने वाली छात्रायें

साइकिल

1. कु० शाम्भवी मिश्रा पुत्री दीपक मिश्रा, कक्षा 8 सेकेन्ड्री कालेज सीतापुर
2. कु० प्रिया शुक्ला पुत्री बृजेन्द्र कुमार शुक्ला, कक्षा 11, केन्द्रीय विद्यालय
अलीगंज, लखनऊ
3. स्वाति अवस्थी, पुत्री विजय कुमार अवस्थी, कक्षा 10, सुमित्रा इंटर कालेज
सीतापुर
4. खुशी बाजपेयी कक्षा, पुत्री के एल बाजपेयी, 9, नवयुग रेडियन्स कालेज राजेन्द्र
नगर लखनऊ
5. राशि मिश्रा पुत्री विनोदकुमार मिश्रा, कक्षा 9 दयानन्द कालेज लखनऊ
6. स्मृति शुक्ला पुत्री सरयूप्रसाद शुक्ला, कक्षा 9, दयानन्द कालेज लखनऊ
7. वैशाली तिवारी, कक्षा 8, सर्वोदय विद्यालय, काली मिट्टी, उन्नाव

स्टेशनरी (पूरे सत्र की)

8. निधि मिश्रा पुत्री सुधीर मिश्रा, कक्षा 4, दयानन्द कालेज लखनऊ
9. रक्षा अवस्थी पुत्री किशन कुमार अवस्थी, कक्षा 9 दयानन्द कालेज लखनऊ
10. लक्ष्मी शुक्ला पुत्री जयप्रकाश शुक्ला, कक्षा 11 दयानन्द कालेज, लखनऊ

सहयोग के लिए हम जिनके आभारी हैं

1. श्रीमती मनोरमा तिवारी, जयपुर स्मृति-पुत्री स्व० डा अर्चना त्रिपाठी रू० 11000.00 का सावधि जमा जिससे प्रतिवर्ष 1000 रुपये छात्राओं हेतु दान स्वरूप होगा।
2. श्री गंगा प्रसाद तिवारी रू० 6000.00
3. श्री पी के दीक्षित स्नेह नगर, स्मृति माँ शारदा देवी रू० 5100.00
(2000.00 आभा मण्डल 3100.00 साइकिल)
4. श्रीमती मीनू द्विवेदी स्मृति- पति स्व० रत्नेश द्विवेदी रू० 5000.00
5. इं० देवेश शुक्ल, स्मृति- माता स्व० उषा शुक्ला रू० 4000.00
6. श्रीमती शैल मिश्रा, स्मृति पति स्व० जी पी शुक्ल रू० 3000.00
7. श्री अखिलेश पाठक , पाठकगंज, मलिहाबाद, लखनऊ रू० 2000.00
8. डा. परेश शुक्ला, सर्जन, स्मृति पिता वाणी-पुत्र
स्व. यू डी शुक्ल रू० 3500.00
9. डा डी एस शुक्ला, स्मृति मौसी स्व० उर्मिला मिश्रा रू० 2000.00
10. श्रीमती मालती मिश्रा, स्मृति पिता तुल्य भाई
स्व० पं. लक्ष्मी नारायण बाजपेयी 'दादा जी' रू० 1000.00
11. श्रीमती विनोदनी मिश्रा, फतेहपुर-84, उन्नाव रू० 1000.00
12. श्रीमती आशा दीक्षित, गोमती नगर, लखनऊ रू० 1000.00



Shashi Tharoor's Scalding Oxford Union Speech Against Colonial

Madam President and gentlemen, ladies of the house

I standing here with eight minutes in my hands in this venerable and rather magnificent institution, I was going to assure you that I belong to the Henry VIII School of public speaking - that as Henry VIII said to his wives 'I shall not keep you long'. But now finding myself the seventh speaker out of eight in what must already seem a rather long evening to you I rather feel like Henry VIII's the last wife. I know more or less of what expected of me but I am not sure how to do it any differently.

Perhaps what I should do is really try and pay attention to the arguments that have advanced by the Opposition today. We had for example Sir Richard Ottaway suggesting - challenging the very idea that it could be argued that the economic situation of the colonies was actually worsened by the experience of British colonialism.

Well I stand to offer you the Indian example, Sir Richard. India share of the world economy when Britain arrived on it's shores was 23 per cent, by the time the British left it was down to below 4 per cent. Why? Simply because India had been governed for the benefit of Britain.

Britain's rise for 200 years was financed by it's depredations in India. In fact Britain's industrial revolution was actually premised upon the de-industrialisation of India.

The handloom weaver's for example famed across the world whose products were exported around the world, Britain came right in. There were actually these weaver's making fine muslin as light as woven wear, it was said, and Britain came right in, smashed their thumbs, broke their looms, imposed tariffs and duties on their cloth and products and started, of course, taking their raw material from India and shipping back manufactured cloth flooding the world's markets with what became the products of the dark and satanic mills of the Victoria in England

That meant that the weavers in India became beggars and India went from being a world famous exporter of finished cloth into an importer when from having 27 per cent of the world trade to less than 2 per cent.

Meanwhile, colonialists like Robert Clive brought their rotten boroughs in England on the proceeds of their loot in India while taking the Hindi word loot into their dictionary as well as their habits.

And the British had the gall to call him Clive of India as if he belonged to the country, when all he really did was to ensure that much of the country belonged to him.

By the end of 19th century, the fact is that India was already Britain's biggest cash cow, the world's biggest purchaser of British goods and exports and the source for highly paid employment for British civil servants. We literally paid for our own oppression. And as has been pointed out, the worthy British Victorian families that made their money out of the slave economy, one fifth of the elites of the wealthy class in Britain in 19th century owed their money to transporting 3 million Africans across the waters. And in fact in 1833 when slavery was abolished and what happened was a compensation of 20 million pounds was paid not as reparations to those who had lost their lives or who had suffered or been oppressed by slavery but to those who had lost their property.

I was struck by the fact that your Wi-Fi password at this Union commemorates the name of Mr Gladstone - the great liberal hero. Well, I am very sorry his family was one of those who benefited from this compensation.

Staying with India between 15-29 million Indians died of starvation in British induced famines. The most famous example was, of course, was the great Bengal famine during the World War II when 4 million people died because Winston Churchill deliberately as a matter of written policy proceeded to divert essential supplies from civilians in Bengal to sturdy tummies and Europeans as reserve stockpiles.

He said that the starvation of anyway underfed Bengalis mattered much less than that of sturdy Greeks' - Churchill's actual quote. And when conscious stricken British officials wrote to him pointing out that people were dying because of this decision, he peevishly wrote in the margins of file, "Why hasn't Gandhi died yet?"

So, all notions that the British were trying to do their colonial enterprise out of enlightened despotism to try and bring the benefits of colonialism and civilisation to the benighted. Even I am sorry - Churchill's conduct in 1943 is simply one example of many that gave light to this myth.

As others have said on the proposition - violence and racism were the reality of the colonial experience. And no wonder that the sun never set on the British empire because even god couldn't trust the English in the dark.

Let me take the World War I as a very concrete example since the first speaker Mr. Lee suggested these couldn't be quantified. Let me quantify World War I for you. Again I am sorry from an Indian perspective as others have spoken about the countries. One-sixth of all the British forces that fought in the war were Indian - 54 000 Indians actually lost their lives in that war, 65 000 were wounded and another 4000 remained missing or in prison.

Indian taxpayers had to cough up a 100 million pounds in that time's money. India supplied 17 million rounds of ammunition, 6,00,000 rifles and machine guns, 42 million garments were stitched and sent out of India and 1.3 million Indian personnel served in this war. I know all this because the commemoration of the centenary has just taken place.

But not just that, India had to supply 173,000 animals 370 million tonnes of supplies and in the end the total value of everything that was taken out of India and India by the way was suffering from recession at that time and poverty and hunger, was in today's money 8 billion pounds. You want quantification, it's available.

World War II, it was even worse - 2.5 million Indians in uniform. I won't believe it to the point but Britain's total war debt of 3 billion pounds in 1945 money, 1.25 billion was owed to India and never actually paid.

Somebody mentioned Scotland, well the fact is that colonialism actually cemented your union with Scotland. The Scots had actually tried to send colonies out before 1707, they had all failed, I am sorry to say. But, then of course, came union and India was available and there you had a disproportionate employment of Scots, I am sorry but Mr Mckinsey had to speak after me, engaged in this colonial enterprise as soldiers, as merchants, as agents, as employees and their earnings from India is what brought prosperity to Scotland, even pulled Scotland out of poverty.

Now that India is no longer there, no wonder the bonds are loosening. Now we have heard other arguments on this side and there has been a mention of railways. Well let me tell you first of all as my colleague the Jamaican High Commissioner has pointed out, the railways and roads were really built to serve British interests and not those of the local people but I might add that many countries have built railways and roads without having had to be colonised in order to do so.

They were designed to carry raw materials from the hinterland into the ports to be shipped to Britain. And the fact is that the Indian or Jamaican or other colonial public - their needs were incidental. Transportation - there was no attempt made to match supply from demand from as transports, none what so ever.

Instead in fact the Indian railways were built with massive incentives offered by Britain to British investors, guaranteed out of Indian taxes paid by Indians with the result that you actually had one mile of Indian railway costing twice what it cost to built the same mile in Canada or Australia because there was so much money being paid in extravagant returns.

Britain made all the profits, controlled the technology, supplied all the equipment and absolutely all these benefits came

as British private enterprise at Indian public risk. That was the railways as an accomplishment.

We are hearing about aid, I think it was Sir Richard Ottaway mentioned British aid to India. Well let me just point out that the British aid to India is about 0.4 per cent of India's GDP. The government of India actually spends more on fertiliser subsidies which might be an appropriate metaphor for that argument.

If I may point out as well that as my fellow speakers from the proposition have pointed out there have been incidents of racial violence, of loot, of massacres, of blood shed, of transportation and in India's case even one of our last Mughal emperors. Yes, may be today's Britains are not responsible for some of these reparations but the same speakers have pointed with pride to their foreign aid - you are not responsible for the people starving in Somalia but you give them aid surely the principle of reparation for what is the wrongs that have done cannot be denied.

It's been pointed out that for the example dehumanisation of Africans in the Caribbean, the massive psychological damage that has been done, the undermining of social traditions, of the property rights, of the authority structures of the societies - all in the interest of British colonialism and the fact remains that many of today's problems in these countries including the persistence and in some cases the creation of racial, of ethnic, of religious tensions were the direct result of colonialism. So there is a moral debt that needs to be paid.

Someone challenged reparations elsewhere. Well I am sorry Germany doesn't just give reparations to Israel, it also gives reparations to Poland perhaps some of the speakers here are too young to remember the dramatic picture of Charles William Brunt on his knees in the Walter Gaiter in 1970.

There are other examples, there is Italy's reparations to Libya, there is Japan's to Korea even Britain has paid reparations to the New Zealand Maoris. So it is not as if this is something that is unprecedented or unheard of that somehow opens some sort of

nasty Pandora box.

No wonder professor Louis reminded us that he is from Texas. There is a wonderful expression in Texas that summarises the arguments of the opposition 'All hat and no cattle'.

Now, If I can just quickly look through the other notes that I was scribbling while they were speaking, there was a reference to democracy and rule of law. Let me say with the greatest possible respect, you cannot to be rich to oppress, enslave, kill, maim, torture people for 200 years and then celebrate the fact that they are democratic at the end of it.

We were denied democracy so we had to snatch it, seize it from you with the greatest of reluctance it was considered in India's case after 150 years of British rule and that too with limited franchise.

If I may just point out the arguments made by a couple of speakers. The first speaker Mr. Lee in particular conceded all the evil atrocities of the colonialism but essentially suggested that reparations won't really help, they won't help the right people, they would be use of propaganda tools, they will embolden people like Mr Mugabe. So, it's nice how in the old days, I am sorry to say that either people of the Caribbean used to frighten their children into behaving and sleeping by saying some Francis Drake would come up after them that was the legacy, now Mugabe will be there - the new sort of Francis Drake of our time.

The fact is very simply said, that we are not talking about reparations as a tool to empower anybody, they are a tool for you to atone, for the wrongs that have been done and I am quite prepared to accept the proposition that you can't evaluate, put a monetary sum to the kinds of horrors people have suffered. Certainly no amount of money can expedite the loss of a loved one as somebody pointed out there. You are not going to figure out the exact amount but the principle is what matters.

The fact is that to speak blithely of sacrifices on both sides as an analogy was used here - a burglar comes into your house and sacks the place but stubs his toe and you say that there was

sacrifice on both sides that I am sorry to say is not an acceptable argument. The truth is that we are not arguing specifically that vast some of money needs to be paid. The proposition before this house is the principle of owing reparations, not the fine points of how much is owed, to whom it should be paid. The question is, is there a debt, does Britain owe reparations?

As far as I am concerned, the ability to acknowledge your wrong that has been done, to simply say sorry will go a far far far longer way than some percentage of GDP in the form of aid.

What is required it seems to me is accepting the principle that reparations are owed. Personally, I will be quiet happy if it was one pound a year for the next 200 years after the last 200 years of Britain in India.

Thank you very much madam President

शुभ समाचार



SHRUTI MISRA daughter of **Dr. Virendra Kumar Misra** and **Dr. Chandra Kanta Misra** married to **PRASHANT AWASTHI** son of **Raj Shekhar Awasthi & Abha Awasthi**. On 29th April 2018 At Golden Imperial Resorts. Lucknow. Shuti is company sectray with ICSI delhi. Prasant is working with CERN (European organization for Nuclear Research, Geneva, Switzerland.

शुभकामनाओं सहित :



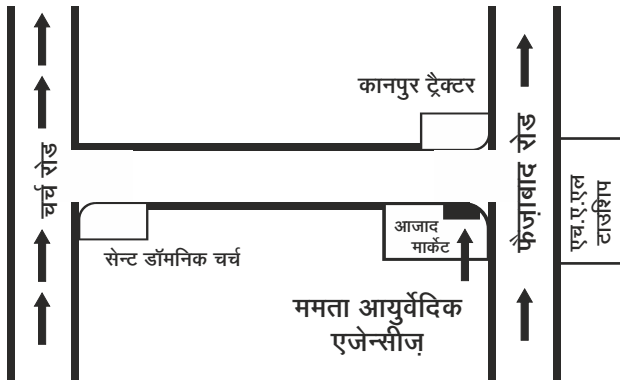
आयुर्वेद : आयु यानि जीवन, वेद यानि ज्ञान

ममता आयुर्वेदिक एजेन्सीज

एस 6/132, आजाद मार्केट, एच.ए. एल. गेट के सामने,
इन्दिरा नगर, लखनऊ फोन 0522-2344328

उच्च कोटि की आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधियों हेतु पधारें।

वैद्यों के नुस्खे बनाने की सुविधा उपलब्ध है।



कैकेयी

दशरथ की तीनों रानियों में कौसल्या सबसे पहली पत्नी थी, अतः साम्राज्ञी का पद उन्हें स्वाभाविक रूप से मिल गया। कौसल्या से कोई संतान न होने के कारण दशरथ ने कैकय देश की राजकुमारी कैकेयी से विवाह किया। कैकय राज्य बहुत बड़ा तो नहीं था परंतु दुर्द्धर्ष योद्धाओं का देश होने के कारण महत्वपूर्ण था। कैकेयी सुंदर होने के अलावा शस्त्र-कला में प्रवीण थी। प्रसिद्ध था कि कैकय राजकुमारी अपने पिता अश्वपति और भाइयों के साथ रणभूमि युद्ध हेतु भी जाती थी। कैकेयी के इन्हीं गुणों पर मुग्ध होकर दशरथ ने स्वयं विवाह का प्रस्ताव कैकय नरेश के पास भेजा। वय में कैकेयी से काफी बड़े दशरथ के साथ अपनी गुणवती युवा पुत्री का विवाह करना उसके पिता व भाइयों को रुचिकर तो नहीं लगा परंतु मना करना भी राज्य के लिए विपत्तिकारक हो सकता था। कहते हैं कि यह विचार करके कैकय नरेश ने दशरथ से वचन लिया था कि उनकी पुत्री का पुत्र ही अयोध्या का उत्तराधिकारी होगा। कौसल्या इतने दिनों में पुत्र नहीं दे सकी थी, अतः निश्चित था कि कैकेयी से जन्मा पुत्र ही उत्तराधिकारी होगा। दशरथ को राजा अश्वपति की शर्त मानने में कोई आपत्ति नहीं हुई। परंतु फिर भी राजा दशरथ को संतान नहीं हुई। ऐसी परिस्थिति में उन्होंने सुमित्रा से तीसरा विवाह किया। सुमित्रा बहुत बड़े राजघराने से नहीं थी अतः उसकी महत्वाकांक्षाएं ऊँची नहीं थीं। दशरथ की तीनों रानियों में सुमित्रा ही सबसे संतोषी और विनम्र थी। वह राजा के सदैव अनुकूल रहने के अलावा अपनी दोनों उप-पत्नियों को भी समुचित आदर देती थी। अतः दशरथ के रनिवास में अभी तक सबकुछ ठीक ठाक चल रहा था।

मगर कालगति हमेशा ऋजु रेखा में नहीं होती। विधाता कुछ न कुछ करतब करने में सदा से प्रवीण है।

पुत्रेष्टि यज्ञ और चारों राजकुमारों के जन्म के साथ ही रनिवास और रानियों के मायके में भी हलचल सी मच गई। सबसे बड़ी और 'ज्येष्ठ पुत्र-प्रसूता' होने के कारण कौसल्या के मातृ-पक्ष में कौसल्या को राजमाता और राम के युवराज बनने में कोई संदेह नहीं था, वहीं कैकय-राज को राजा दशरथ का दिया हुआ वचन एकाएक जोरों से याद आने लगा, जिसे वह यदाकदा दशरथ को स्मरण भी कराते रहते। सुमित्रा के बेटे न तो ज्येष्ठ थे न ही उसके प्रति दशरथ किसी प्रतिज्ञा से वचन बद्ध थे। ऐसी स्थिति में सुमित्रा

इन सब झंझटों से विरक्त थी।

कैकेयी के मन में भरत के जन्म लेते ही उसको इक्ष्वाकु वंश का उत्तराधिकारी बनाने की कामना उदित हो चुकी थी। वह चाहती थी की सुमित्रा के दोनों पुत्र भरत के अनुगामी हों। यही कारण था कि उसने सुमित्रा से मेलजोल बढ़ा लिया था। वैसे भी कौसल्या सदा गंभीर रहती थी। इस कारण उससे अधिक मेलजोल संभव ही नहीं था।

सुमित्रा के पुत्रों को भरत के पक्ष में करने की कैकेयी की लालसा सुफल तो हुई, किन्तु अधूरी—

लक्ष्मण जन्म से राम के प्रति अनुरक्त थे। उनका राम के प्रति प्रेम तब से ही जाहिर होने लगा था, जब से उन्होंने पेट के बल खिसकना सीखा था। चारों शिशुओं को शय्या पर कहीं भी किसी भी क्रम में लिटाया जाता, लक्ष्मण थोड़ी ही देर में प्रयास कर राम के समीप पहुँच जाते। जहाँ यह सभी के लिए विस्मय और मनोरंजन का विषय था वहीं कैकेयी के लिए चिंता का।

लक्ष्मण के राम के प्रति जबरदस्त एकाधिकार की भावना ने शत्रुघ्न को स्वाभाविक रूप से भरत की ओर उन्मुख कर दिया।

जहां कौसल्या राम के अभिषेक और और स्वयं को राजमाता बनने के बारे में आश्वस्त थी, वही कैकेयी सतर्क रहती थी।

आज के आखेट में हुई यह घटना सतर्क कैकेयी के मन में शूल सी बेध रही थी...लक्ष्मण इसी वय में यदि राम का पक्ष लेकर बड़े भाई भरत से अकारण ही हिंसक हो सकता है, तो युवा अवस्था में लक्ष्मण भरत के लिए चिंता का विषय हो सकता है। उसने विचार किया कि भरत के समर्थ होने तक उसे राम— लक्ष्मण की जोड़ी से दूर रखना होगा। भरत युवा होने तक अपने ननिहाल में ही रहेगा।

यह निश्चय करके कैकेयी इसे कार्यान्वित करने के लिए दशरथ को सहमत करने चल दी।

कैकेयी सुंदर होने के साथ विदुषी एवं वीर भी थी। इतने गुण एक ही स्त्री में कम ही पाये जाते हैं। इसी कैकेयी दशरथ के लिए अपरिहार्य सी हो गई। वह युद्ध भूमि में भी वह दशरथ के साथ उनके रथ में उपस्थित होती। कई बार विषम परिस्थितियों में अपनी तात्कालिक बुद्धि और वीरता से वह दशरथ की प्राणरक्षक भी सिद्ध हुई। ऐसे ही प्रयाणों में राजा की प्राणरक्षा

के प्रत्युपकार में उसको दो मनचाहे वर देने का वचन भी मिल चुका था। नीतिवती कैकेयी ने दशरथ के इन वरदानों को “समय आने पर माँग लूँगी” कह कर अपनी कुटिलनीति के शस्त्रागार में ब्रह्मास्त्र की भाँति सँजो कर रखा था। राजा कैकेयी की हर बात मानता था और वह स्वयं राजा से हर बात मनवाने का विश्वास भी रखती थी।

वशिष्ठ

अयोध्या के चारों राजकुमार शैशव एवं बाल्यावस्था को छोड़कर अब किशोरावस्था में प्रवेश करने वाले थे। राजा दशरथ के मन से वात्सल्य की जगह रजोगुणी क्षात्र भाव जाग्रत हो चुका था। गुरु वशिष्ठ भी संभवतः इसी परिवर्तन की प्रतीक्षा कर रहे थे। वृद्धावस्था की संतति अधिक मोहित करती है, यह सोच कर गुरु ने अभी तक चुप रहना ही श्रेयष्कर समाज्ञा।

एक दिन स्वयं राजसभा में दशरथ ने वशिष्ठ से कहा, “गुरुदेव, अभी तक इक्ष्वाकु वंश, अयोध्या और मैं स्वयं आपके मार्गदर्शन और कृपा से फले फूले। मगर अब एक नई पीढ़ी का उदय हो रहा है। इस पीढ़ी पर इस कुल और वंश परंपरा का मात्र निर्वाह ही उसका ध्येय नहीं होना चाहिए। उसका ध्येय प्रजा के हित, कल्याण और कोशल राज्य की कीर्ति को और ऊँचाइयों तक पहुँचाने वाला होना चाहिए। गुरुदेव, यह आपकी अनुकंपा के बिना संभव नहीं हो सकेगा” कहकर राजा हाथ जोड़ कर वशिष्ठ के सामने नत मस्तक हो गए।

वशिष्ठ का भी इष्ट यही था। उन्होंने बाल-मोह के आवरण से निकले दशरथ से प्रसन्नता से बोले “राजन्, मैं इसी पल की प्रतीक्षा कर रहा था। चारों राजकुमारों का लालन काल व्यतीत हो चुका है। मुझे यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि क्षत्रिय राजकुमारों की भाँति चारों भाई खेल खेल में ही अस्त्र संचालन और मृगया में समुचित रुचि ही नहीं ले रहे, वरन् काफी कुछ निष्णात भी हो चुके हैं। परंतु उन्हें अब प्रजा से परिचय करना चाहिए। इसके साथ ही उनका सैन्य प्रशिक्षण भी प्रारम्भ होना चाहिए”। यह कह कर वशिष्ठ ने एक सैन्याधिकारी व एक कनिष्ठ मंत्री को राजकुमारों का जनता से परिचय कराने का आदेश दिया।

अभी दशरथ राजसभा से अंतःपुर पहुंचे ही थे कि संदेशवाहक ने सूचना दी “प्रभु, आपको गुरुदेव अपनी कुटिया से आपको आशीष भेजा है”।

कह कर वह विनीत मुद्रा में खड़ा होगया ।

दशरथ एकदम से असहज हो गए । अभी तो राजसभा में गुरुदेव के ही सानिध्य में था । फिर कुछ ही क्षणों के बाद ही उनका बुलावा कैसे? अवश्य ही कोई महत्वपूर्ण अथवा गोपनीय बात होगी । यह सोचते हुए राजा तत्काल ही गुरु कुटी में प्रस्तुत हुए । दशरथ कि अभ्यर्थना के बाद वशिष्ठ ने उन्हें आशीर्वाद देकर उपयुक्त आसन दिया । राजा के आसन ग्रहण करते ही वशिष्ठ बगैर किसी भूमिका के बोले "राजन्, ज्ञात होगा अयोध्या और मिथिला के मध्य के वन प्रदेश को दोनों देशों ने वनवासियों को अपनी संस्कृति के अनुसार स्वच्छंद जीवन यापन करने के लिए पीढ़ियों से छोड़ रखा है । इसका एक कारण और भी था । अभी तक यह क्षेत्र दोनों राज्यों के मध्य टकराहट रोकने का भी माध्यम भी रहा है । इस वनांचल में एकाएक अराजकता व्याप्त हो रही है । यह तो तुम्हें ज्ञात ही होगा?"

"हाँ, गुप्तचरों की यही सूचना है कि उस प्रदेश में राक्षस स्कंधावार, जिन्हें रावण ने इन्द्र और कुबेर पर नियंत्रण हेतु स्थापित किया था, वह एकाएक सक्रिय हो गए हैं । उन स्कंधावारों के राक्षसों ने अब वनवासियों पर अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया है । इसके साथ ही वे वहाँ स्थित ऋषियों के आश्रमों की दिनचर्या और धर्मकार्यों में भी विघ्न डाल रहे हैं ।"

दशरथ गुरु की प्रतिक्रिया जानने के लिए रुके, पर गुरु मात्र दशरथ को देखे जा रहे थे । उन्हें लगा कि गुरु दृष्टि में प्रश्न था कि इस सूचना के बाद भी राजा ने कोई कार्यवाही क्यों नहीं की?

गुरु की प्रश्नवाचक दृष्टि से कुछ असहज होते हुए दशरथ ने सफाई दी "वैसे वहीं पर शंबर विजेता विश्वामित्र का भी आश्रम है । यदि बात अधिक बढ़ेगी तो विश्वामित्र जी स्वयं निबटने में सक्षम हैं ।"

"यह जानते हुए भी कि विश्वरथ अब क्षात्र धर्म त्याग कर ब्रह्म विद्या का अभ्यास कर रहे हैं । क्रोध और हिंसा से वह अंतिम रूप से विरत हो चुके हैं?" गुरु के स्वर में उपालंभ था ।

दशरथ आँखें नीचे करते हुए लगभग फुसफुसाते हुए कहा, "अभी चारों राजकुमार कच्ची अवस्था में हैं । मैं नहीं चाहता कि रावण, जो अभी तक अयोध्या की गति विधियों से तटस्थ है, उससे अकारण ही वैर आमंत्रित करूँ । इसी नीति का अनुसरण करने का निश्चय लिया है मैंने । जैसे राजकुमार आपके प्रशिक्षण से समर्थ हो जाते, आर्यावर्त से रावण के स्कंधावारों को नष्ट

कर दिया जाएगा”

“ऐसा नहीं है राजन्, रावण बहुत बड़ा नीतिज्ञ है। हिमालय में इन्द्रलोक के बाद अब अयोध्या और मिथिला ही रावण की राज्य विस्तार की नीति में हैं। जनक के कोई पुत्र नहीं है, अयोध्या भी अभी तक बिना उत्तराधिकारी के थी। अतः रावण दोनों राज्यों का क्षीण होना ध्रुव सत्य मान रहा था। परंतु अयोध्या को एक नहीं चार चार योग्य उत्तराधिकारी मिल जाने से उसका यह सपना पूरा नहीं हो सकेगा। अतः अब रावण की विस्तारवादी महत्वाकांक्षा के चलते वह दोनों राज्यों को चुनौती दे रहा है। किन्तु अभी भी रावण इस स्थिति में नहीं है कि वह सुदूर लंका से अयोध्या और मिथिला की सम्मिलित शक्ति का सामना कर सके। इसलिए उसने दोनों राज्यों को एक कर पराभूत करने का उद्यम प्रारम्भ भी कर दिया है।

राजा मौन।

अयोध्या को समर्थ उत्तराधिकारी मिल जाने के कारण रावण ने एक निश्चित कूटनीति से मिथिला का संधान किया है। उसने गंधर्व जाई ताड़का, मारीच और सुबाहु को इस कार्य के लिए नियुक्त किया है। वर्तमान में यह दुष्ट वन देश की सीमा को मिथिला की ओर बढ़ की नदी के भाँति धीरे धीरे काट रहे हैं। वहाँ स्थित आर्य सभ्यता के प्रतीक ऋषि आश्रमों को तहस नहस करना एक निश्चित रणनीति है। मिथिला नरेश भी तुम्हारी तरह यह जानते हुए भी कोई प्रतिरोध नहीं कर रहे हैं। जनक के नीतिकार उन्हें तबतक सैन्य कार्यवाही न करने की मंत्रणा दे रहे हैं, जबतक रावण गौतम ऋषि के आश्रम की सीमा नहीं लांघता।

मेरा मानना है कि शत्रु को एक सैन्य नीति के तहत ढील देना उचित है। परंतु रावण इस तथ्य से परिचित है कि यह ढील नीति नहीं, मात्र तुम दोनों राजाओं की निष्क्रियता का परिणाम है। इस सुयोग का समय रहते वह लाभ उठाना चाहता है। रावण का अनुमान संभवतः सत्य है कि जब वह मिथिला पर एकाएक आक्रमण करेगा, तब तुम अपने पुत्रों को इस भयंकर समराग्नि से बचाना चाहोगे और मिथिला की सहायत से विरत रहोगे।”

कुछ देर रुकने के बाद वशिष्ठ ने चेतावनी भरे शब्दों से दशरथ को झकझोर सा दिया “और मिथिला को जीत कर वहाँ अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के बाद, वनवासियों की वेषभूषा में रावण की सेना अयोध्या में प्रवेश करेगी। जब तुम तथा कथित वनवासियों की ओर उन्मुख होगे तभी, पर्वत प्रदेश से

रावण की इंद्र-जयी सेना उत्तर दिशा की ओर से तुम पर टूट पड़ेगी। अयोध्या की सेना चक्की के दो पाटों के बीच पीस दी जाएगी।”

“अतः दशरथ! यदि कुछ करना है तो यही सबसे उचित समय यही है। तुम्हें मिथिलानरेश से इस सम्बन्ध में मंत्रणा करनी चाहिए। और यह मंत्रणा गुप्त होनी चाहिए जिससे रावण को एकाएक कोई भी कदम उठाने का अवसर न मिल सके।”

दशरथ कुछ नहीं कह सके। मात्र गुरु को मस्तक नवा कर चल दिये। उनके मन में क्षात्र भाव का उदय होने लगा था। वशिष्ठ ने जाते हुए दशरथ की पीठ को देखा। वह एकदम सीधी थी। शिर गर्व से तना था। उन्हें संतोष हुआ कि उनकी मंत्रणा का राजा पर उचित और कल्याणकारी प्रभाव हुआ।

— डॉ. डी.एस. शुक्ला

के उपन्यास ‘श्यामल काया, गोरी छाया’की दूसरी कड़ी

बंधन-मुक्त

शरीर स्वयं ही एक बंधन है, फिर भी श्मशान में देह दाह के पहले शरीर के समस्त बंधन खोल दिये जाते हैं। यज्ञोपवीत भी उतार देते हैं। एक साधारण वस्त्र का टुकड़ा जिससे शरीर के प्राइवेट पार्ट्स ढके जाते हैं, की गाँठ भी खोल दी जाती है। इन सब कृत्यों का उद्देश्य है कि जाते समय कोई गाँठ न रह जाए। शरीरी बंधन मुक्त होकर प्रयाण करे।

विचारणीय है कि, मृत शरीर चाहे बँधा हो या नहीं उसे तो जल कर नष्ट ही होना है। बंधन विहीन करने का का व्यापार मृतक के लिए नहीं वरन् उपस्थित हितैषियों के लिए संदेश होता है।

शरीर के नष्ट होते ही महत्तत्त्व (जीवात्मा और बुद्धि) दूसरा शरीर धारण करने चल पड़ता है। मन के साथ गए इस जन्म के ईर्ष्या, द्वेष अगले जन्म में भी संस्कार रूप में मन को मलिन करते रहेंगे।

अतः मनुष्य को चाहिए कि जीवित रहते हुए ही दूसरों के किए-अनकिए दोषों को क्षमा कर दे, भुला दे, ताकि इसी जन्म में ही मन व बुद्धि विकार रहित हो जाए।

निर्णायक समझौता : कश्मीर और अफगानिस्तान दोनों समस्याओं का हल

अमेरिका और भारत दोनों एक ही देश से पीड़ित हैं, पाकिस्तान। समस्या भी एक ही है, पाकिस्तानी सेना द्वारा चोरी छुपे जिहादियों का पोषण, संरक्षण, प्रोत्साहन, एवं सैन्य मदद। समस्या, हालाँकि साझी है, दोनों की बेबसी से कारण अलग अलग हैं। भारत की सेनाएँ, इस काबिल तो हैं कि पाकिस्तान के जिहादी ठिकाने नष्ट कर सकें, वे संभावित युद्ध के परिणामों को नियंत्रित रखने में सक्षम नहीं हैं, शक्ति में बढ़त इतनी नहीं है कि पाकिस्तानी सेना को स्तम्भित किया जा सके। किसी भी सैन्य कारवाही से पहले, शक्ति असंतुलन इतना अधिक होना चाहिए कि पाकिस्तानी सेना लड़ने की सोचे ही नहीं, सीधे हथियार डाल दे। दूसरी और अमेरिकी और नाटो सेनाओं के पास ऐसी शक्ति है, कि यदि वे उसे पूरी तरह प्रयोग में लाएँ तो पाकिस्तानी सेना के पास कोई जवाब ही नहीं है, फिर भी अमेरिका कोरी धमकी देकर पाकिस्तानी सेना को समझाने बुझाने का प्रयत्न करने लगता है। कारण, वह जमीन पर अपने सैनिक नहीं खोना चाहता।

जमीन पर सेना भेजे बिना, नियंत्रण में दीर्घकालिक बदलाव नहीं लाया जा सकता। वायुसेना और जहाजों द्वारा आप तबाही तो मचा सकते हैं, नियंत्रण में परिवर्तन नहीं ला सकते। पिछले 50 वर्षों में लगभग सभी समाजों का ढाँचा बुनियादी तौर पर बदल गया है। कुछ दशकों पहले तक हर परिवार में अमूमन 4-6 बच्चे होते थे। आज यह संख्या 1 या 2 हो गई है। जब 4 या 6 बच्चे होते थे तब युद्ध में यदि 1 या 2 शहीद भी हो गए तो समाज की संरचना पर बहुत प्रभाव नहीं पड़ता था। घटना परिवार को संतुष्ट करती थी, लेकिन परिवार निराशा के गर्त में जा कर बदहाली का शिकार नहीं हो जाता था। आज, यदि परिवार का अकेला जवान लड़का युद्ध में मारा जाये तो यह परिवार के लिए पूर्ण विनाश का संदेश होगा। उनको जीने का उद्देश्य छिनता हुआ लगेगा। किसके लिए जिएँ, यह सवाल खड़ा हो जाएगा। पूरी समाज पर इसकी गहन प्रतिक्रिया होगी। इसीलिए अमेरिका आज ड्रोन अथवा वायुसेना द्वारा हमला करने में तो नहीं हिचकिचाता, सैनिक भेजने से पहले दस बार सोचता है।

मुस्लिम देश इसमे अपवाद हैं। वहाँ आज भी छोटे परिवारों का चलन नहीं है। मुस्लिम देशों में आज भी 4-6 बच्चे वाले परिवार बहुतायत में हैं। इसी लिए जहाँ भारतीय सेना में सैनिक अफसरों के लिए लड़के नहीं मिलते, पाकिस्तान में सेना में जाने के लिए लड़को की कतार लगी रहती हैं। इसी लिए आज शायद विश्व में मुस्लिम देशों में हिंसक संघर्ष सबसे अधिक है।

भारत और अमेरिका, दोनों की, समस्या का समाधान उनके साझा समझौते में है। अमेरिका और नाटो देशों की वायुसेना और जलसेना, पाकिस्तानी सेना को पूरी तरह स्तंभित करने में समर्थ है, और भारत जमीन पर नियंत्रण करने के लिए जरूरी सैनिक दे सकता है। समझौते का उद्देश्य, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का जड़ से खात्मा और 1946-47 में ब्रिटेन द्वारा किए गए भूलों का परिमार्जन होना चाहिए।

1946 तक भारत के विभाजन की कोई बात नहीं थी। इससे पहले, दूसरा विश्व युद्ध जब अपनी परिणिति की ओर बढ़ रहा था और सोवियत सेनाएँ जर्मनी में प्रवेश कर चुकी थीं, इंग्लैंड के प्रधान मंत्री श्री चर्चिल ने दिल्ली स्थित भारतीय उपमहाद्वीप एवं मध्य पूर्व के सामरिक सलाहकार जनरल आर.सी. मनी को युद्ध खत्म होने के बाद, सोवियत संघ से भारत पर होने वाले खतरों के बारे में 15 दिनों में रिपोर्ट देने को कहा। जनरल मनी ने चर्चिल को अपनी रिपोर्ट में मध्यपूर्व, ईरान और उपमहाद्वीप पर सोवियत संघ के प्रभाव को रोकने के लिए भारत के उत्तर-पश्चिम हिस्से में (बलोचिस्तान, सीमांत प्रांत) ब्रिटेन और अमेरिका द्वारा सैनिक अड्डे बनाने की जरूरत बताई। भारत के तत्कालीन वाइसराय जनरल वावेल ने जब कांग्रेस के नेताओं, पंडित नेहरू और सरदार पटेल से इस बारे में राय जाननी चाही तो दोनों ने, स्वतंत्र भारत में किसी विदेशी सैनिक अड्डे की संभावना को पूरी तरह नकार दिया। वस्तुतः, इस समस्या से निबटने के लिए, कलात राज्य (बलोचिस्तान) को स्वतंत्र करने की योजना बनाई गई और 5 अगस्त 1947 को भारत और पाकिस्तान की आजादी से 10 दिन पहले, कलात को एक स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर दिया गया। जब भारत के विभाजन की बात उठी और श्री जिन्ना ने ब्रिटिश अमेरिकी सैन्य सहयोग की मंशा जताई, तब अंग्रेजों को लगा, कलात जैसे एक छोटे राज्य के बजाए पाकिस्तान से सैन्य सहयोग बेहतर होगा और उन्होंने भारत के विभाजन की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया। यही नहीं, लन्दन के तत्कालीन भारत सचिव लार्ड लिस्तोवेल ने भारत के

वाइसराय लार्ड माउन्टबेटेन को एक सन्देश भेजा कि कलात को स्वतंत्र रखना बहुत जोखिम का हो सकता है अतः पाकिस्तान को ऐसा कुछ भी करने से रोका जाए, जो कलात को एक सार्वभौमिक राष्ट्र के रूप में स्वीकार करता हो। अंततः 20 अप्रैल 1948 को पाकिस्तानी सेनाओं ने अंग्रेज मेजर जनरल मैसी और ब्रिगेडियर अकबर खां के नेतृत्व में कलात पर हमला किया और रात 2 बजे, कलात के शासक नवाब रहीम यार खाँ द्वारा जबरन विलय के कागजों पर हस्ताक्षर करवाए गए। बलोच तभी से अपनी आजादी को लिए संघर्ष कर रहे हैं।

इस पूरे कार्यक्रम को यदि कोई देश बिगाड़ सकता है तो वह है, चीन। चीन, अपने पश्चिमी इलाके, सिन्कीयांग, को ग्वादर बंदरगाह से जोड़ना चाहता है। यदि चीन को आश्वस्त कर दिया जाये कि उसके असैनिक व्यापार में बाधा नहीं डाली जाएगी और उसके इस रास्ते के उपयोग का अधिकार बना रहेगा, वह भी बहुत विरोध नहीं करेगा।

भाग्यवश, अमेरिका में आज एक ऐसा प्रशासन है, जो बड़े खतरे लेने से नहीं हिचकिचाता। उन्हें अफगानिस्तान में आज कोई रास्ता नहीं दिख रहा है। अतः वे पाकिस्तान को धमकाते भी हैं और फिर उसी के पास जाते भी हैं ताकि वह किसी तरह तालिबान को मेज पर लाए जिससे कि वे वहाँ से निकल सकें। हमें अमेरिका को समझाना चाहिए कि तालिबान समझौता नहीं चाहते। वे जमीन के लिए नहीं, विचारधारा के लिए लड़ रहे हैं। उनमें अलकायदा, आई.एस., जमात-उद्दावा आदि में कोई फर्क नहीं है। उनका लक्ष्य अफगानिस्तान में नियंत्रण से खत्म नहीं होता, वह केवल पहला कदम है। उनका लक्ष्य पूरे विश्व में अमेरिका, यूरोप सहित, इस्लामिक शासन लाने से पूरा होता है। उसके लिए, वे यदि समझौता कर भी ले, तो वे उसे तोड़ेंगे। इसके लिए कितना भी संघर्ष करना पड़े, वे करेंगे। उनके लिए जिहाद में शहादत भी एक लक्ष्य है क्योंकि उसके द्वारा वह सीधे जन्नत जाते हैं, उन्हें कयामत तक अल्लाह के बुलाने का इंतजार नहीं करना पड़ता। पाकिस्तानी सेना का भी लक्ष्य यही है। विश्वास नहीं है तो केवल पाकिस्तानी सेना का मोटो देख लो। पाकिस्तानी सेना का मोटो है, "जिहादे सबी अल्लाह" यानी अल्लाह के लिए जिहाद। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

पाकिस्तान ने 1971 में हमें एक मौका दिया था, 1947 में अंग्रेजों द्वारा पैदा की गई विसंगतियों को सुधारने का। तत्कालीन राजनैतिक नेतृत्व ने इसे आधा ही किया। सेना द्वारा खोले गए संभावनाओं का पूरा फायदा नहीं

उठाया गया और जो थोड़ी बहुत बढ़त मिली भी थी, उसे शिमला समझौता में खो दिया गया। आज हमारे राजनैतिक नेतृत्व को एक बार फिर मौका मिला है, इतिहासिक भूलों को सुधारने का। हमारा लक्ष्य पूरे जम्मू कश्मीर की पाकिस्तानी अतिक्रमण से मुक्ति, बलोचिस्तान खैबर पख्तुनवा एवं सिंध में जनमत संग्रह द्वारा उनके भविष्य का निर्णय, इस प्रकार पाकिस्तान का पुनर्गठन और पाकिस्तानी सेना की काट छाँट होना चाहिए। पुनर्गठित पाकिस्तान की सीमाओं की गारंटी यदि अमेरिका, यूरोप, भारत, चीन, रूस, ईरान समेत सभी देश दे दें तो उसका दायरा केवल आंतरिक शांति बनाये रखने का हो जाता है, उसी के अनुसार उसे पुनर्गठित करना चाहिए। सवाल यह है कि क्या आज के भारतीय नेतृत्व के पास इतना साहस और दूरदृष्टि है कि वह इस निर्णायक समझौते की पहल कर सके।

— के. नाथ

बड़ोदरा, गुजरात

बधिक

पत्रकार ने बधिक से पूछा— “लोगों को फाँसी देते समय आप कैसा महसूस करते हो?” बधिक ने बड़ी शालीनता से उत्तर दिया— “वैसा ही जैसा आप इंटरव्यू लेने में करते हैं। फाँसी का फंदा बनाते समय मेरा पूरा ध्यान रहता है कि दोषी को कम से कम कष्ट हो।”

पत्रकार व्यंग्य से मुस्कराया—“तो आप भी कलाकार हैं!” “जी हाँ, मैं एक डाक्टर की भाँति महसूस करता हूँ जो मरीज के सड़े गले हिस्से को इसलिये कुशलता से काट देता है जिससे मरीज की जान बच सके।”

पत्रकार ने बधिक से कहा—“आप को कोई ग्लानि या पाप का भय नहीं होता?”

“नहीं, बिलकुल नहीं! क्या सीमा पर हमारी रक्षा में तत्पर सैनिक को पाप लगता है जो हमारी रक्षा में दुश्मन को गोली मार देता है? क्या वह जज जिसने दोषी को मृत्यु दण्ड दिया वह पाप का भागी है? यदि नहीं तो मैं भी अपना कार्य करता हूँ और इसमें मेरा कोई व्यक्तिगत दोष नहीं।”

स्तब्ध पत्रकार को लगा जैसे उस निरक्षर बधिक ने उसे ‘गीता ज्ञान’ सुना दिया जिसमें कहा है कि आततायी को मारने में कोई पाप नहीं, ‘कर्तव्य—कर्म’ करने से प्रारब्ध नहीं बनता।

शान-ए-अवध

लखनऊ है उत्तर प्रदेश की ठाठ
यहाँ हम सीखें नज़ाकत का पाठ
कथक की ताल पर थिरकते पैर
बना लेते हैं अपना, जो होते हैं ग़ैर

चलने में भी है एक अदा
चाट पर होती महिलाएं फ़िदा
नबाबी था हज़रतगंज एक वो भी था ज़माना
गोमती के पास कभी लहरों को सहलाना

इमामबाड़े के सफ़र पर जरा निकलिए तो आप
शाही बाउली में पूरे हुए
प्राचीन वैज्ञानिकों के ख़्वाब
जब लखनऊ महोत्सव की हवाएँ हो ताज़ी
तब जाना ही पड़ता है, अब क्या कहे काज़ी

चिकन के कुरते में जब ख़ातून हो मौजूद
इतनी बुलंदी से खिल उठता है उसका वजूद
घंटाघर है बता रहा, अब समय हुआ पूरा
माफ़ करिएगा अगर मैंने छोड़ा कुछ अधूरा
अब और क्या बताऊँ यहाँ के बारे में आपको जनाब
बस इतना समझ लीजिए कि अवध है लाजवाब

आशिता शुक्ला

कक्षा 8, स्टडी हाल स्कूल,
लखनऊ

अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा

एवं यशस्वी पत्रिका

कान्यकुब्ज वाणी

को

होली व नव संवत्सर

की

हार्दिक शुभकामनाएँ

मे० भावना इंट्रप्राइजेज

प्र० बालकृष्ण द्विवेदी

कांट्रैक्टर श्रेणी-AA, पी डब्ल्यू डी

मीरापुर, प्रयागराज- 30 प्र०

मो. 9415365814

जीवन साथी

कुछ देर तक लता को गौर से देखने के बाद लता की पारसी पड़ोसन बोली, "तुम अपना एक नया शादी क्यों नहीं बना लेता गर्ल।" लता एकाएक चौंक गई, "क्या बात है प्रिंसी, आज सुबह से ही लगा ली क्या?"

"नहीं! मैं सूरज ढलने के पहले वाइन को हाथ भी नहीं लगती। शाम को भी सिर्फ अकेलापन दूर करने को पीती हूँ।" फिर जैसे सपनों में खोती हुई बोली, "हमारा अगर वेल्डु भाई से सेटेलमेंट हो गया तो यह भी छूट जाएगा। मैं तो कहती हूँ तू भी शुरू कर दे। अकेलापन दूर करने के लिए बहुत मुफीद है यह चीज, जिसे मुंबई में दारु बोलते हैं।"

"नहीं मैं यह आदत नहीं पाल सकती। हमारे यहाँ मर्दों तक का दारु पीना अच्छा नहीं माना जाता", कह कर वह चाय बनाने चली गई।

प्रिंसी लता के पीछे-पीछे किचेन में आते हुए बोली "अई, तभी तो कह रही हूँ कि शादी बना ले। जानती हूँ कि तू दारु तो पीने से रही।"

प्रिंसी उसी के फ्लैट में रहने वाली पारसी महिला थी, जो लता के साथ उसी बैंक में काम करती थी। लता से 5-6 वर्ष बड़ी होने की वजह से पहले रिटायर हो कर इस फ्लैट में आई थी। उसी के कहने पर लता भी इसी सोसाइटी में दो रूम का फ्लैट ले कर रहने लगी। प्रिंसी का पहला पति बहुत कम उम्र में नहीं रहा। प्रिंसी उसे बहुत प्यार करती थी। उसे अभी भी भूल नहीं पाई। पति के मरने के दो साल के अंदर ही उसने अपने से 10 साल बड़े आदमी से शादी करली। प्रिंसी का दूसरा पति भी पिछले साल नहीं रहा। प्रिंसी लगभग 70 वर्ष कि उम्र में दोबारा फिर से अकेली रह गई।

पारसी लोग अपनी जाति के बाहर शादी नहीं करते। भारत में बसने आए उनके पूर्वजों ने यहाँ के राजा को वचन दिया था कि उनके वंशज भारतीयों के धर्म-परिवर्तन का प्रयास नहीं करेंगे और न ही अपनी कौम से अलग शादी करेंगे। तब से आज तक पारसी लोग अपनी इस प्रतिज्ञा पर दृढ़ हैं।

लता को मालूम था कि प्रिंसी से लगभग 7-8 साल छोटा एक पारसी प्रिंसी के घर बहुत आ जा रहा है। इतनी उम्र हो जाने के बाद भी वह आज तक कुँवारा ही है। वह प्रिंसी से शादी करने को बहुत उतावला है।

एक दिन प्रिंसी के प्रति उसका अनुराग देख कर लता ने कहा,

“प्रिंसी, तुम इसए शादी क्यों नहीं कर लेती। बेचारा कितने दिनो से तुम्हारे चक्कर काट रहा है?”

“ओय, तुमको मालूम नहीं विक्टर अभी तक वर्जिन है।”

लता, “तो क्या हुआ कम से कम सेकेंड—हैंड तो नहीं है”

“अरे पता नहीं लड़कियों ने इससे शादी क्यों नहीं की। कहीं मर्दानगी में कोई कमी तो नहीं है” प्रिंसी स्वर को धीमा करते हुए बोली।

लता को चाय पीते पीते हँसी आ गई, “अरे इस उम्र में भी तुम्हें मर्दानगी की जरूरत है?”

प्रिंसी झंपते हुए, “अरे नहीं ऐसी बात नहीं है। मैं तो सिर्फ यह बता रही थी कि लड़कियों में ऐसी ही कुछ अफवाह थी।”

फिर हँसते हुए लता के गाल पर चुटकी लेते हुए बोली “वैसे, अगर लाइफ शेयरिंग के साथ ‘यह’ भी मिल सके तो बोनस की तरह नहीं होगा? कभी—कभी मोनोटनी भी दूर हो जायेगी।” दोनों हँसने लगी।

फिर एकाएक प्रिंसी चाय का प्याला नीचे रख कर लता का लैपटाप खोल कर उसमे कुछ सर्च करने लगी। 5 मिनट के बाद ही वह लैपटाप लेकर लता को देखते हुए बोली, “यह देखो तुम्हारे लायक दो तीन रिश्ते इस साइट पर मिल ही गए। आखिर मर्दों की भी तो जरूरत होती है।”

प्रिंसी को सी—आफ करने के बाद लता खिड़की पर खड़ी हो गई। सामने सी—बीच दिख रही थी, हल्की हल्की बारिश शुरू हो गई थी। कहते हैं, मुंबई की लड़कियों और बारिश का कोई कोई भरोसा नहीं— पता नहीं कब बरसने लगें।

लता एकटक समुद्र को निहार हुई सोच रही थी कि समुद्र में कितनी गहराई है। दुनियाँ की तमाम नदियाँ समुद्र में क्या—क्या डालती रहती हैं फिर भी समुद्र एकदम शांत रहता है। शायद समुद्र की तरह ही स्त्रियाँ छोटी उम्र से ही क्या—क्या झेलती हैं, फिर भी सागर की तरह शांत बनी रहती। किसी से शिकायत नहीं करती।

एकाएक उसने सोचा कि अगर सागर शांत है तो उसमें लहरें क्यों, ज्वार क्यों...? शायद चन्द्रमा के आकर्षण से ही वह लहराता है और ऊपर उठने का प्रयास करता है। उसे जयशंकर प्रसाद की पंक्तियाँ याद आई—

**देखा बौने सागर का शशि छूने को ललचाना,
वह हाहाकार मचाना फिर उठ-उठ कर गिर जाना ।।**

अकेलापन तो विशाल सागर को भी खलता है... उसे प्रिंसी का प्रपोजल याद आ गया, जिसे वह बलात् दिमाग से ठेल कर किचेन जाकर खाना बनाने लगी। मगर खाना बनाने में उसका मन नहीं लगा। किसी प्रकार उल्टा-सीधा बना कर वह लॉबी में आ गई। उसकी दृष्टि लैपटाप पर पड़ी जिसे प्रिंसी बगैर बंद किए ही चली गई थी। लता ने देखा कि लैपटाप स्लीपिंग मोड में चला गया था। बंद करने के लिए उसने लैपटाप को फिर से स्टार्ट किया। स्क्रीन पर वही मैट्रीमोनियल साइट खुली थी जिसे प्रिंसी सर्च कर रही थी। उत्सुकता में ही लता उसे देखने लगी। लता ने देखा साइट पर काफी सीनियर सिटीजन्स ने जीवन साथी के लिए अपनी प्रोफाइल अपलोड कर रखी थी। सभी एकाकी जीवन से बचने के लिए इस उम्र में भी पुनर्विवाह के उत्सुक थे। उसे लगा कि पुरुष एकाकी जीवन से अधिक त्रस्त रहते हैं। हो सकता है कि बाहर वह चाहे जितना काम कर लें पर घर पहुँच कर वह पत्नी पर आश्रित हो जाते हैं। जहाँ पति-पत्नी दोनों कामकाजी होते हैं वहाँ कुछ ही लोग पत्नी के कार्य में हाथ बँटाते हों। संभवतः यही कारण है कि वह अकेलेपन से ज्यादा पीड़ित होते हैं। हो सकता है कि इसी कारण से पुराने जमाने में पुरुषों का अधिक उम्र में भी पुनर्विवाह मान्य हुआ करता था।

लता को पुरानी कहावत याद आई "जब पचपन के घर-घाट भयेन तब देखुया आए बड़े-बड़े"। वहीं शायद महिलाएं अपनी नारी-सुलभ लज्जा के चलते वैवाहिक विज्ञापन नहीं दे पातीं।

यह भी हो सकता है कि भारतीय परिवेश में महिलाओं का पुनर्विवाह और खासकर बड़ी उम्र में ठीक नहीं माना जाता। बड़ी उम्र की एकाकी महिलाओं से समाज की यही अपेक्षा रहती है कि उसे अपना जीवन नाती-पोतों के पोतड़े धोने में ही गुजार देना चाहिए। यह सोच के लता को हंसी आ गई कि नारी से समाज को मात्र सेवा की ही अपेक्षा होती है, उसकी अपनी इच्छा का कोई महत्व ही नहीं। इस विचारधारा के विरोध में अथवा अनजाने में ही उसने एक विज्ञापन में अपना बायो-डाटा अपलोड करके भेज दिया।

कर्नल गायत्री फौज से 'फूल कर्नल' के पद से रिटायर हुए थे। अच्छा स्वास्थ्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व, खुशमिजाज जिंदादिल इंसान थे

कर्नल गायत्री। जब वह रेगुलर सर्विस में थे उनकी रंगीनियत के किस्से काफी मशहूर थे। सेवा-निवृत्त होने के बाद कर्नल साहब कैंट के पास ही एक कालोनी में एक फ्लैट में रहने लगे। उनके साथ उनकी निहायत शरीफ पत्नी भी थीं, जो कर्नल साहब की आशिकी कैसे बर्दाश्त करती हैं? यह तथ्य भी उतना ही चर्चित था जितना कर्नल साहब की रंगीनियत। संभवतः उन्होंने कर्नल साहब के इस दुर्गुण को चंद्रमा में कलंक की अनिवार्यता मान कर समझौता कर लिया था।

उस भली महिला ने कर्नल साहब की सेवानिवृत्ति के बाद लगभग सात-आठ साल साथ निभाया, और फिर एक दिन वह कर्नल साहब को नितांत अकेला छोड़ कर परलोक सिधार गईं। खुशमिजाज कर्नल साहब, जो दूसरों का अकेलापन दूर करते थे, वह स्वयं अकेले रह गए।

कर्नल साहब के एक ही बेटा प्रतीक था। प्रतीक भी सेना में ही था और इस समय वह भी कर्नल था तथा उसकी पदोन्नति कभी भी हो सकती थी। अकेलेपन से आजिज आकर कर्नल साहब अपने फ्लैट पर 'फ्लैट फार-सेल' की तख्ती लगा कर अपने बेटे के साथ रहने आ गए। बेटा तथा बहू संस्कारी थे। दोनों उनका बहुत ध्यान रखते थे। बेटे के एक बेटा थी। वह भी दादा के आने पर खिल उठी। वह हमेशा उनके चारों ओर घूमती रहती— "दादा यह कहानी सुनाओ, वह कहानी सुनाओ, दादा इस बार तुमने कहानी एकदम शार्ट कर दी ठीक तरह से सुनाओ न!" आदि-आदि

क्लब लाइफ के शौकीन कर्नल साहब कभी-कभी अपने बेटे के साथ मेस जाते। पर वह महसूस करते कि उनकी उपस्थिति से मेस का हमेशा उन्मुक्त रहने वाला वातावरण बोझिल हो उठता। कारण— लोग कर्नल के पिता के रूप में सब उनको सहज भाव से नहीं लेते थे। उनके दरम्यान जेनेरेशन गैप आड़े आ जाता था। इसलिए कुछ दिनों बाद उन्होंने मेस जाना बंद कर दिया। कुछ दिन आराम से गुजारने के उपरांत कर्नल साहब बेटे के यहाँ असहज महसूस करने लगे। स्कूल खुल गया था। पोती सुबह स्कूल और शाम को होम वर्क में व्यस्त हो गई। बहू भी बेटा के स्कूल में पढ़ाती थी। सुबह और शाम के बीच के समय में कर्नल साहब नितांत अकेले रह जाते। अकेलापन! इसी अकेलेपन से बचने के लिए ही तो वह बेटे के यहाँ रहने आए थे, पर बच्चों की अपनी व्यस्ततायें थी। उन्हें लगा कि अब वह परिवार के मुखिया न होकर दीवाल में लगी फोटो की भाँति होगये जिस पर सिर्फ माला पड़नी शेष थी। उन्होंने यह भी महसूस किया कि व्यक्ति को अपने हम उग्र

लोगों के बीच ही रहना चाहिए। यह सोच कर कर्नल साहब बेटे-बहू के लाख रोकने पर भी अपने प्लैट में वापस चले आए। प्लैट के दरवाजे पर लगी 'फार-सेल' की तख्ती को निकाल कर फेंक दिया।

‘अपने’ घर पहुँच कर ही कर्नल साहब सामान्य हो पाये। उनका नित्य की मार्निंग-वाक, लाफ्टर-क्लब, नियमित व्यायाम और प्राणायाम एक बार फिर से प्रारम्भ हो गया। प्लैट के पड़ोसी, उनके सर्विस-काल के मित्र जो रिटायर होकर उसी शहर में रह रहे थे, का आना जाना लगा रहता। घर की साफ सफाई के लिए एक बाई भी लगा ली थी। जिंदगी पटरी पर आ गई, मगर...

कर्नल साहब की सुबह शाम तो कट जाती पर दोपहर और शाम, और फिर रात में वही अकेलापन! किसी के साथ की अपेक्षा होती। सोचा एक डॉगी ही पाल लिया जाये। परन्तु प्लैट में रहने के कारण वह भी संभव नहीं था। रात के सुनसान में उन्हें अपनी पत्नी के साथ गुजारे दिन याद कर भावुक हो जाते। जितनी अच्छी पत्नी थी, वह स्वयं उतने अच्छे पति शायद साबित नहीं हुए। बीते हुए दिन याद कर उनकी आँखों में आँसू आ जाते। जब उनका बेटा छोटा था, उसकी किलकारियों से घर गूँज उठता था। पर अब बेटे की वह शैतानियाँ जिस पर उन्हें क्रोध आता था, मन उन्हें फिर से पाना चाहता था। घर की नीरवता उन्हें काटने दौड़ती थी। पवित्र बाइबिल में कहानी है अकेलेपन से दुखी मानव को प्रसन्न करने के लिए ही ईश्वर ने मानवी की सृष्टि की। मानवी के बिना आदि-मानव कितना अकेला रहा होगा, यह कर्नल साहब को अब समझ आया।

सत्य है, आदमी सहज उपलब्ध चीजों को तब तक महत्व नहीं देता, जब तक वह उससे छिन नहीं जाती। वहीं शायद यह भी उतना ही सच है कि जिन चीजों की प्रबल कामना हो, उसके किसी न किसी प्रकार से फलीभूत होने संभावनाये भी स्वतः बनने लगती हैं। और फिर—

एक दिन अमरीका से उनका एन आर आई भांजा अपने भारत प्रवास के दौरान उनके घर भी रुका। दस वर्षों तक अमरीका में रहने के कारण भांजा पाश्चात्य संस्कृति में ढल चुका था। उसको समझ नहीं आ रहा था कि मामा जी क्यों वियोगियों सा जीवन बिता रहे हैं। उसने अपने मामा को बताया कि अमरीका में जहाँ दाम्पत्य बंधन अति-भंगुर होते हैं कि कभी कभी शादी के फौरन बाद ही तलाक हो जाता है, वहीं 60 वर्ष की उम्र के बाद की

गई शादियों में दाम्पत्य सम्बन्ध अधिक प्रगाढ़ और स्थायी होते हैं। वहाँ उस उम्र में ही पति-पत्नी एक दूसरे के पूरक हो पाते हैं। उसने कर्नल साहब को पुनर्विवाह करने के लिए प्रेरित व उत्साहित किया।

कर्नल साहब ने पूछा, "इस उम्र में मुझसे कौन शादी करने को राजी होगा?"

भांजा, "आपको उम्र के इस पड़ाव पर कोई कुँवारी कन्या तो मिलेगी नहीं! यदि मिली भी तो उसकी निगाह आपकी दौलत पर ही होगी। उसके अंदर जल्दी से जल्दी मालदार विधवा बनने की तमन्ना होगी। इसलिए आपको अपने समवयस्क महिला की अपेक्षा करनी करनी चाहिये। अकेली महिलाएं भी पुरुषों की तरह एकाकी हो जाती हैं।"

यह कह कर भांजे ने अपने लैपटाप पर तत्काल ही अपने सत्तर वर्षीय मामा का वैवाहिक विज्ञापन डाल दिया। मामा ने दबा हुआ प्रतिरोध किया, जो इतना कमजोर था कि इनकार से अधिक इकरार मालूम पड़ रहा था। भांजे ने मुसकुराते लैपटाप बंद किया, "मामा जी इस विज्ञापन का उत्तर अगले हफ्ते तक ही मिल जाएगा। मुझे विश्वास है कि इस अंतराल में आप अपने नए और सार्थक जीवन की शुरुआत के लिए मन पक्का कर लेंगे।"

फिर उसने मामा के दोनों हाथ पकड़ कर कहा, "मामाजी, शादी के बाद अमेरिका में हनीमून मनाने के लिए मेरा एडवांस निमंत्रण है। याद रखियेगा।"

कहकर वह जिस हवा के झोंके की तरह आया उसी तरह चला गया। परंतु जाते समय मामा की जिंदगी में एक मधुर सुगंध छोड़ गया था।

मामा जी (कर्नल साहब) उस रात बगैर ड्रिंक के ही सो गये। रात भर उनको अपने एकाकी जीवन और एक साथी की चाहत में दिनकर की 'उर्वशी' की यह पंक्तियाँ घूमती रहीं—

"शब्दगुण गगन रोकता ख का नही गमन है.

निश्चय, विरहाकुल पुकार से कभी स्वर्ग डोलेगा,

और नीलिमापुंज हमारा मिलन मार्ग खोलेगा"

...और वास्तव में सुबह उठ कर जब अपने कंप्यूटर पर 'शब्दगुण गगन' (इन्टरनेट) खोला तो स्क्रीन पर उनका 'ड्रीम कम्स टू' पेज ही खुला। कर्नल साहब कि विरहाकुल पुकार एक नहीं तीन बालाओं तक पहुंची थी।

जिसके उत्तर में तीनों ने अपने 'जीवन-वृत्त' (बायो-डाटा) भेजे थे। इनमें से दो विधवा और एक अभी तक कुँवारी थी।

कर्नल साहब ने धड़कते दिल से तीनों बायो-डाटा का अध्ययन किया। सबसे पहले वाले को तो उन्होंने तत्काल ही रिजेक्ट कर दिया जो की एक सत्तर वर्षीय महिला का था। सोचा यह साथी, कम लायबिलिटी अधिक होगी। दूसरा बायो-डाटा में 50 वर्षीय अविवाहित बाला आकर्षक मुद्रा में मुस्करा रही थी। जिसे देख कर उनकी पहली से बढ़ी हुई धड़कन और बढ़ गई। इसके पहले कि कर्नल साहब जवाब देते उनको मिलिटरी का काशन याद आया— 'हर आकर्षण के पीछे एक छुपा ट्रैप हो सकता'। उन्होंने उस बायो डाटा को यह सोच कर हटा दिया कि इस महिला के मन में कहीं शायद 'धनवान विधवा' बनने की महत्वाकांक्षा न हो। जीवन में जो जितना अंतरंग होता है वह उतना ही घातक भी हो सकता है। 'मनमीत ही अगन लगाये उसे कौन बचाये...उसे कौन बचाये'।

तीसरे बायो-डाटा को देखकर उन्हें कुछ संतोष हुआ। यह जीवन वृत्त एक साठ वर्षीय महिला का था जो बैंक के अधिकारी पद से रिटायर हो कर मुंबई के एक खुद के फ्लैट में रह रही थी। उसकी एकलौती बेटी शादी करके अपने पति और बच्चों के साथ कनाडा में रह रही थी। उसके भारत वापस आने की सम्भावना नगण्य थी। उसमहिला ने बायो-डाटा में ही यह स्पष्ट उल्लेख किया था, कि सम्बन्ध होने के पहले ही वह फ्लैट समेत अपनी सारी संपत्ति अपनी बेटी के नाम कर देगी। होने वाले जीवन साथी का उसपर कोई अधिकार नहीं होगा।

कर्नल साहब को यह महिला व्यावहारिक बुद्धि वाली और समझदार लगी। साठ वर्ष की उम्र में वह अभी तक वह पूर्ण रूप से स्वस्थ थी और आवश्यकता पड़ने पर स्वयं उनकी सेवा सुश्रुषा भी करने में सक्षम होगी। उम्र के साठवें पड़ाव पर वह 'युवती वृद्धस्य विषम्' भी साबित नहीं होगी।

सत्तर वर्ष की उम्र में पुनर्विवाह के खयाली पुलाव बनाना तो सरल होता है पर जब निर्णय की बेला आती है तो 'कर्तव्यं वा न कर्तव्यम्' (करूँ या न करूँ) की दुविधा आन पड़ती है। अकेले इतना महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन घबराता है। बेटे से यह बात करने में उन्हें संकोच हो रहा था। ऐसी मानसिक दशा में उन्हें अपने सेना के पूर्व अभिन्न मित्र जो उसी शहर में रह रहे थे उनकी याद आई। उन्होंने तत्काल ही अपने उन अभिन्न को 'ईवनिंग ड्रिंक्स' के लिए आमंत्रित किया।

शाम को दो ड्रिंक्स गले में उतरने के बाद मदिरा की मादकता के असर में कर्नल साहब ने अपने मित्र से अपने अकेलेपन और उसके उपचार के रूप पुनर्विवाह का विकल्प बताया। मित्र ने पहले तो इसे कर्नल साहब का विनोद ही माना— “इस उम्र में तुझे दूसरी शादी करने की क्या जरूरत? अब तेरे अंदर कुछ बचा भी है?”

कर्नल साहब गंभीर मुद्रा में बोले, “बात अंदर की गर्मी की नहीं है। मेरी मजबूरी है। बच्चों के घर मैं नहीं रह सकता, बच्चे नौकरी छोड़ कर मेरे साथ नहीं रह सकते। दोपहर से रात तक का अकेलापन बहुत व्यथित करता है। और फिर इस उम्र में भी मेरा अंदर बहुत कुछ ‘बचा’ है।”

बात गंभीर थी। दोनों का नशा गायब हो चुका था। मित्र ने पूछा कि उपयुक्त महिला मिलेगी कैसे? कर्नल साहब ने वैवाहिक विज्ञापन देने और उसके उत्तर में आए तीनों महिलाओं के बायो—डाटा दिखा कर प्रत्येक के बारे अपना विस्तृत आँकलन भी बताया।

तय हुआ कि आगे का निर्णय साठ वर्षीय महिला से मिलने के बाद ही लिया जाय।

उधर लता अपने द्वारा भेजे गए बायो—डाटा के बारे में भूल ही गई थी कि, एक दिन उसे कर्नल साहब का ई—मेल मिला, जिसमें कर्नल साहब ने आने वाले जीवन कि विस्तृत विवेचना करते हुए मिलने का प्रस्ताव रखा था। उन्होंने सुझाव दिया था कि यदि लता चाहे तो मुंबई से लखनऊ तक हवाई यात्रा का प्रबंध कर्नल साहब स्वयं कर सकते हैं, अथवा वह स्वयं भी मुंबई उससे मिलने आ सकते हैं।

बहुत सोच विचार के बाद लता ने निश्चय किया कि एक बार मिलने में कोई हर्ज नहीं।

वह अपने खुद के खर्चे से कर्नल साहब से मिलने लखनऊ आई। इस यात्रा के पीछे होने वाली साथी को जानने के अलावा उसके आस पास के माहौल को भी वह समझना चाहती थी।

मिलने पर दोनों को लगा कि वह ‘मेड फार ईच अदर’ हैं। तय हुआ कि अंतिम निर्णय बच्चों से विमर्श के बाद ही होगा।

लता की बेटी ने कहा, “माँ अब मैं भारत तो आने से रही। इस लिए तुम नितांत अकेली ही रहोगी। मुझे तुम्हारे इस निर्णय से कोई असर नहीं

पड़ेगा। विदेश में रहने के बाद मेरे पति और बच्चों का भी नजरिया काफी बादल चुका है। यहाँ (कनाडा में) तो यह आम बात है।”

वहीं कर्नल साहब के बेटे और और बहू के लिए यह सूचना बम विस्फोट से कम नहीं थी। दोनों ने पूरा विरोध किया, रोये—चिल्लाए भी, कि बुढ़ौती में बाप की शादी की खबर सुन कर लोग कहेंगे। दो तीन दिन झकझक के बाद प्रतीक ने अल्टिमेटम देकर बहस बंद कर दी। उसने साफ—साफ कह दिया कि यदि कर्नल साहब विवाह करते हैं तो वह उनके साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखेगा। “नो फूल इज वर्स्ट देन ओल्ड फूल (बूढ़े से अधिक कोई मूर्ख नहीं होता)।”

बेटे का विरोध कर्नल साहब को इस सम्बन्ध में आगे बढ़ने से रोक रहा था। परन्तु बेटे के अंतिम वाक्य ने उन्हें अपने मन के अनुसार निर्णय करने को संकल्प पर और दृढ़ कर दिया।

उन्होंने लता को अपना अंतिम निर्णय सुना दिया।

लता ने छः महीने के अंतराल बाद ही अंतिम निर्णय करने का फैसला किया। उसने कर्नल साहब से इस दौरान एक दूसरे को समझने के अभिप्राय से एक दो बार और मिलने की सलाह दी। इन छह महीनों में लता लखनऊ आई और कर्नल साहब मुंबई भी गए। इन मुलाकातों ने उन दोनों के बीच का संकोच मिटा दिया। कर्नल साहब ने शादी करने का दिन 14 फरवरी ‘वैलेंटीन डे’ का सुझाव दिया। लता ने कर्नल साहब की इस जिंदादिली पर फिदा होते सहर्ष हाँ कह दी।

धूमधाम से शादी हुई। कर्नल साहब तो घोड़ी पर चढ़ना चाहते थे। डाक्टर के मना करने पर ही माने। शादी में उनके पड़ोसी कुछ उन्मुक्त भाव से और कुछ चुहल के लिए शामिल हुए।

शादी के बाद पड़ोसियों को तीन दिन तक कर्नल साहब के दरवाजे ‘डोंट डिस्टर्ब’ का बोर्ड लगा देख उत्सुकता और हैरानी हुई। उनके अघेड़ पड़ोसियों की पत्नियों ने उलाहने भरे भाव से अपने पतियों को इस बोर्ड की तरफ इंगित किया।

इन सकारात्मक घटनाओं के अलावा कुछ नकारात्मक प्रतिक्रिया भी हुई। कर्नल साहब के बेटे का फोन आया। बेटे बहुत गुस्से में था। उसने बहुत कुछ कहा जिसका सारांश था— ‘इस महिला ने उनके धन की वजह से शादी की है, कुछ दिनों के अन्दर उन्हें मार कर पूरी संपत्ति लेकर चंपत हो जाएगी”

इस पर कर्नल साहब ने अप्रत्याशित रूप से शांत रहकर बेटे की बात सुनते रहे। जब बेटे भड़ास निकाल चुका तो उन्होंने शांति से कहा "बेटा, मैंने दुनिया देखी है। इतनी लंबे जीवन ने आदमी पहचानने की काफी क्षमता दे दी है। परामर्श के लिए धन्यवाद, और तुम सबको आशीर्वाद" फिर कुछ रुक कर "और हाँ, एक और बात— नो फूल कैन बी वर्स्ट दैन ए यंग फूल(युवा से बड़ा कोई मूर्ख नहीं होता)" कहकर वह शांति के साथ फोन आफ करके लेट गए। उनकी पत्नी लता इस वार्तालाप में एक ही तरफ की बात सुन पा रही थी, फिर भी बात का मजमून वह समझ रही थी।

कर्नल साहब ने लता को बताया कि बेटे का फोन था। लता ने कहा "जानती हूँ।"

असल में प्रतीक ने पहले लता को ही फोन किया था। उसकी तमाम अनर्गल बातें और धमकियों के उत्तर में लता ने कहा "बेटे यह मेरा अपना व्यक्तिगत फैसला है जिसमें मेरी बेटी पूरी तौर पर शामिल है। यदि तुम्हें कोई शिकायत है तो, तुम्हें अपने पिता से बात करनी चाहिये। जहाँ तक मेरा सवाल है कर्नल साहब के रिश्ते से तुम मेरे पुत्रवत नहीं पुत्र ही हो।"

प्रतीक "देवी जी मेरी मेरी माँ मर चुकी है। अब मेरी कोई माँ नहीं है।" कहकर उसने कनेशन काट दिया।

दूसरी नकारात्मक प्रतिक्रिया कर्नल साहब के मित्रों की पत्नियों की थी। अधिकतर पत्नियों ने अपने पतियों को कर्नल साहब के घर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया था। कहीं उनके पति भी बे-हाथ न हो जाएँ।

मगर कर्नल साहब अपनी नई दुनिया में संतुष्ट थे। लता उनके जीवन में एक बार फिर से बहार बन कर आई थी। उसने लगी हुई बाई का काम नहीं छुड़ाया, पर अपने और कर्नल साहब के लिए खाना और नाश्ता दोनों वह स्वयं बनती थी। दोनों कभी लखनऊ और कभी मुंबई के आवास में रहते। लता ने अपना प्लैट और सारी संपत्ति अपनी बेटी के नाम कर दी थी। वहीं कर्नल साहब ने अपने बेटे को अपनी संपत्ति से बेदखल कर दिया था।

आगे के पाँच साल के सुखमय जीवन में कर्नल साहब के बेटे ने एकबार भी अपने पिता से न कोई संपर्क किया और न ही मिलने आया। वह ब्रिगेडियर के पद पर प्रमोट हुआ, पर कर्नल साहब को यह खबर और लोगों के माध्यम से मिली। वह प्रसन्न तो हुए पर बेटे से संपर्क करने का कोई प्रयास नहीं किया। वहीं लता की बेटी हर साल भारत आती तो इन लोगों से

अवश्य मिलती। उसने और उसके पति ने कर्नल साहब को पूर्ण रूप से स्वीकार कर लिया था।

फिर एक रोज लखनऊ में लोगों ने सुबह के अखबार में पढ़ा 'कर्नल का रात सोते में ही स्वर्ग सिंघार गए'। इसके बाद समाचार पत्र यह लिखना नहीं भूले कि उक्त स्वर्गीय कर्नल साहब कुछ सालों पहले सत्तर वर्ष की भरपूर उम्र में नई शादी करने की वजह से सुखियों में आ गए थे।

कर्नल साहब के बेटे को यह सूचना समाचार-पत्रों के माध्यम से मिली। पर उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। लता की बेटी का सांत्वना फोन आया। उसने माँ की आगे की जिंदगी के बारे में जानना चाहा था।

कुछ दिन के बाद स्वर्गीय कर्नल साहब के ब्रिगेडियर बेटे प्रतीक को वकील का नोटिस मिला। नोटिस में सूचना थी कि कर्नल साहब ने उसे अपनी संपत्ति से बेदखल करके सारी संपत्ति अपनी नई पत्नी के नाम कर गए हैं।

यह नोटिस ने ब्रिगेडियर साहब के सब्र के लिए 'लास्ट स्ट्रा' (सब्र की सीमा तोड़ने वाला) साबित हुआ। वह एकाएक फट पड़ा। अपने घर के अंदर खूब चीख-पुकार करने के बाद, उसने अपने स्वर्गीय पिता की विधवा पर मुकदमा दायर करने का निश्चय किया। प्रतीक के वकील ने उसे लता के ऊपर दीवानी और फौजदारी मुकदमा दायर करने की सलाह दी। वकील ने एक नोटिस तैयार की जिसमें लिखा था कि यदि लता कर्नल साहब की धोखे से हड़पी गई संपत्ति कर्नल साहब ने प्रकृतिक वारिस प्रतीक को एक निश्चित अवधि के अंदर वापस नहीं करती है, तो लता के ऊपर कर्नल साहब, जिनका मानसिक संतुलन बुढ़ापे की वजह ठीक नहीं रह गया था, की संपत्ति धोखे से अपने नाम कराने के आरोप में दीवानी और फौजदारी दोनों मुकदमे दायर किए जाएंगे।

कुछ दिनों के बाद बसंत ऋतु की सुबह की धूप में गरम चाय की चुस्की लेते हुए प्रतीक लान में बैठा, लता को भेजे जाने वाले लीगल नोटिस का ड्रैफ्ट देख रहा था। उसकी पत्नी पास में बैठी निटिंग कर रही थी। तभी कूरियर वाला एक बड़ा सा लिफाफा दे गया। केवल पत्र के हिसाब से लिफाफा भारी था। भेजने वाले की जगह लता के वकील का नाम था। प्रतीक ने सोचा लता ने उसके पिता की वसीयत लागू करने हेतु उसे दूसरा लीगल नोटिस भेजा है। उसे जोरों का गुस्सा आया। उसने उस लिफाफे को बगैर

खोले ही जोर से दूर फेंक दिया। लिफाफा बरामदे में दीवार से टकरा कर गिर गया। उसी गुस्से की रौ में उसने अपने वकील को लता को दीवानी और फौजदारी का नोटिस तत्काल भेजने को कहने के लिए निर्देशित करने हेतु फोन मिलाया।

प्रतीक की पत्नी कुछ देर तक उसे आश्चर्य से देखती रही, फिर बरामदे में जाकर उसने वह लिफाफा उठा कर खोला। लिफाफे में एक चाभी थी, जो संभवतः किसी घर की थी, साथ में एक लीगल डाक्यूमेंट और एक हाथ से लिखा लंबा पत्र था। पत्र लता ने लिखा था।

पत्र की कुछ पंक्तियाँ पढ़ते ही बहू की आँखों में आँसू आ गए। वह आगे पढ़ नहीं सकी। बगैर कुछ बोले उसने अपने पति की हाथों से मोबाइल लेकर बंद कर दिया। मोबाइल एकाएक ले लिए जाने से प्रतीक ने क्रोध से पत्नी को घूरा। मगर पत्नी के एक हाथ में कूरियर से भेजा पत्र और आँखों में आँसू देख कर उसका गुस्सा गायब हो गया। किसी अनहोनी की आशंका से घबरा कर उसने पत्नी के हाथ से पत्र लेकर पढ़ना शुरू किया। पत्र का वैसा ही असर उसपर भी हुआ जैसा उसकी पत्नी पर हुआ था।

...पत्र लता के द्वारा लिखा गया था। लता ने लिखा—

प्यारे बेटे,

सही है की तुमने मुझे कभी अपनी माँ का दर्जा नहीं दिया। कोई बात नहीं हमारे यहाँ अपने से छोटों को भी बेटा पुकारने की परंपरा है। उसी परंपरा से मेरा बेटे का सम्बोधन स्वीकार करो...

पत्र काफी भाव भरा था जिसका सारांश था... मैंने और तुम्हारे पिता ने मात्र जीवन एकाकीपन दूर करने के लिए शादी करी थी। यकीन मानो, इसके अलावा हम दोनों का कोई दूसरा स्वार्थ नहीं था। मेरे एक बेटी थी। मैंने सोचा था इस विवाह से मुझे एक बेटे का भी सुख मिल जाएगा। पर शायद वह मेरे भाग्य में नहीं था। कर्नल साहब ने मेरी बेटी को अपनी बेटी, और मेरी बेटी ने उन्हें अपना पिता स्वीकार कर लिया था।

मैंने शादी के तुरंत बाद अपनी वसीयत अपनी बेटी के नाम कर दी थी। अपने पिता की संपत्ति के असली हकदार तुम्ही हो। मैं कर्नल साहब द्वारा दी गई सारी संपत्ति स्वेच्छा से तुम्हारे नाम कर रही हूँ। इसमें कहीं कोई विकार या अपराधबोध नहीं है। कर्नल साहब के प्लैट की चाभी इस पत्र और वसीयत के साथ तुम्हें भेज रही हूँ। चाहना तो इनकी प्राप्ति कर्नल साहब के

वकील को भेज देना। वैसे यह उतना आवश्यक भी नहीं है।

मैं हमेशा के लिए फिर से एकाकी जीवन बिताने के लिए वापस मुंबई अपने फ्लैट में जा रही हूँ।

हाँ, एक बात और...तुम्हारे पापा अंत तक तुम्हें बहुत प्यार करते रहे। उस प्यार को उन्होंने अपने फौजी अक्खड़पन के चलते अंतिम समय तक छुपा कर रखा। फिर भी... कभी न कभी वह उनकी आँखों से झलक और छलक ही जाता था।

सभी को स्नेह एवं आशीर्वाद

तुम्हारी म... नहीं—नहीं जो भी तुम समझना चाहो— लता

अब प्रतीक की आँखें भी डबडबा गईं।

तिलक शुक्ला

रायबरेली

सूक्ति

पुत्रो तिष्ठति गोत्रमेकभुवने कन्या सदा द्विकुले,
सर्वेषां कुलवर्धिनी खलु सदा एकैव कन्या शुभा।
धर्मज्ञानकरी सदासुखकरी धात्रीस्वरूपास्थिता,
तर्हि सन्तति चेद्भवेन्निकुले कन्या सदा सा भवेत्।

पुत्र तो एक ही गोत्र में रहता है, परन्तु कन्या दोनों कुलों में निवास करती है। सबों के कुल को बढ़ाने वाली एक सुलक्षणा कन्या ही है। धर्म का ज्ञान कराने वाली, सदा सुख प्रदान करने वाली, पोषण करने वाली के समान स्थित रहती है। इसीलिए घर में यदि संतति हो तो सर्वदा एक कन्या अवश्य ही हो।

(श्रीराघवेंद्रचरितम्, पूर्वकाण्ड, सुद्युम्न प्रकरण)

C.V. NETRALAYA

CP 6A, Viram Khand-2, Gomti Nagar,
Lucknow
Mob. : 80525 10018

Centre of Comprehensive Eye Care



**Eye Surgeon
Dr. V. K. Mishra**

अमृता प्रीतम जी की वसीयत ..

अपने पूरे होश—ओ—हवास में, लिख रही हूँ आज... मैं, वसीयत ..अपनी
मेरे मरने के बाद, खंगालना.. मेरा कमरा, टटोलना.. हर एक चीज
घर भर में ..बिन ताले के, मेरा सामान.. बिखरा पड़ा है

दे देना... मेरे ख्वाब, उन तमाम.. स्त्रियों को, जो किचेन से बेडरूम
तक सिमट गयी ..अपनी दुनिया में, गुम गयी हैं
वे भूल चुकी हैं सालों पहले, ख्वाब देखना

बाँट देना.. मेरे ठहाके, वृद्धाश्रम के.. उन बूढ़ों में, जिनके बच्चे
अमरीका के जगमगाते शहरों में, लापता हो गए हैं

टेबल पर.. मेरे देखना, कुछ रंग पड़े होंगे
इस रंग से ..रंग देना उस बेवा की साड़ी
जिसके आदमी के खून से, बॉर्डर... रंगा हुआ है
तिरंगे में लिपटकर, वो कल शाम सो गया है

आँसू मेरे दे देना, तमाम शायरों को
हर बूँद से, होगी गजल पैदा
मेरा वादा है

मेरा मान , मेरी आबरू, उस वेश्या के नाम है
बेचती है जिस्म जो, बेटी को पढ़ाने के लिए

इस देश के एक—एक युवक को, पकड़ के
लगा देना इंजेक्शन, मेरे आक्रोश का
पड़ेगी इसकी जरूरत, क्रांति के दिन उन्हें

दीवानगी मेरी, हिस्से में है, उस सूफी के,
निकला है जो, सब छोड़कर, खुदा की तलाश में

बस ! बाकी बची, मेरी ईर्ष्या, मेरा लालच
मेरा क्रोध, मेरा झूठ, मेरा स्वार्थ, तो
ऐसा करना, उन्हें मेरे संग ही जला देना...

अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा

एवं यशस्वी पत्रिका

कान्यकुब्ज वाणी

को

होली व नव संवत्सर

की

हार्दिक शुभकामनाएँ

यमनाथ शुक्ला

कांट्रैक्टर श्रेणी- 'बी'

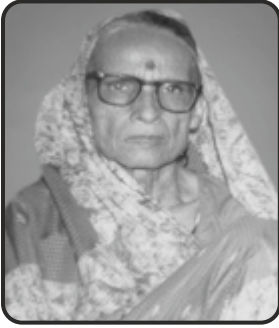
पिकौरा बक्श, मालवीया रोड

गाँधी नगर, बस्ती

मो0 9044753302

श्रद्धांजलि - 1

हमारी माँ (स्व०) श्रीमती शारदा दीक्षित



मेरे नाना स्व० पं० हरिदत्त मिश्र ग्राम मैथा, कानपुर के निवासी थे, जहाँ मेरी पूजनीया माता जी का जन्म हुआ। सन् 1941 में मेरी माँ का विवाह ग्राम बेत्थर, जिला उन्नाव निवासी तत्कालीन डिप्टी एस पी रायबहादुर पं ब्रह्मदत्त दीक्षित के सुपौत्र स्व० पं ब्रह्मकिशोर दीक्षित जी से हुआ। हम लोग अपने पिता को 'दहू जी' कहते थे। दहू जवार में 'फुन्नर दीक्षित' के नाम से जाने जाते थे। दीक्षित परिवार में मेरी माँ एक कुशल गृहणी और आदर्श बहू के रूप में जानी जाती थीं। अपनी माँ से हम चार भाई और एक बहन थे। घर में काफी खेती बाड़ी थी जिसकी देखरेख आ० दहू जी स्वयं करते थे। कृषि के अलावा दहू जी कसरत और कुश्ती के भी शौकीन थे। आस पास के गाँवों में बलिष्ठ दहू का पंजा झुकाने वाला कोई नहीं था। दहू बड़े ही स्वाभिमानी थे। इसी स्वाभिमान के कारण गाँव के ही एक माफिया से अनबन होजाने के कारण दहू को कई वर्ष का निर्वासन भी झेलना पड़ा। सत्य है कि अंत में विजय दहू की ही हुई, किन्तु इस दौरान हमलोगों पर काफी आपदाएँ आईं। पाँच छोटे-छोटे बच्चों की देखभाल, शिक्षा के साथ खेती बाड़ी और घर की जिम्मेदारी मेरी माँ ने बड़ी कुशलता और निडरता से निबाही। उनकी इस कर्मठता एवं कुशलता की कहानी आज भी परिवार और नातेदारी में प्रसिद्ध है।

माँ धर्म पारायण महिला थीं। प्रतिदिन 'रामचरित मानस' पाठ उनका नियम था। मानस की चौपाई—

'मोरि सुधारहु सन सब भाँती। जासु कृपा नहीं कृपा अघाती' ॥

पर उनकी बड़ी श्रद्धा थी। यह चौपाई पर आज भी हमलोगों की वेदवाक्य—सम आस्था है।

अपनी माँ के आशीर्वाद से हम सभी भाई एक ही छत के नीचे, संयुक्त परिवार के रूप में सुखी और सम्पन्न हैं। ऐसी ममतामयी माँ को हम सबका शत-शत नमन

श्रद्धावन्त पुत्र

प्रमोद कुमार दीक्षित

स्नेहनगर, आलमबाग, लखनऊ

मो. 7905913042, 9838922347

श्रद्धांजलि - 2

(स्व०) डॉ अर्चना त्रिपाठी



05 मार्च 1959 – 27 जून 2017

डॉ अर्चना त्रिपाठी हिंदी साहित्य की प्रखर कवियत्री, शिक्षाविद, साहित्यिक अनुवादक, भारत सरकार की ओर से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'भाषा' की सम्पादक एवं अनेक पुस्तिकाओं की लेखिका थी।

अर्चना जी का जन्म 5 मार्च 1959 को उत्तर प्रदेश के बेल्लूपुर गांव में हुआ था। आपके पिता स्वर्गीय बृज किशोर त्रिपाठी स्वयं हिंदी के प्राध्यापक व भारत सरकार को हिंदी सेवाएं देने वाले विद्वान थे। अर्चना त्रिपाठी ने हिंदी व अंग्रेजी में स्नातकोत्तर व फिर हिंदी में शोध कर पीएच. डी. की थी।

अर्चना त्रिपाठी मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार के केंद्रीय हिंदी निदेशालय नई दिल्ली में उप निदेशक के पद पर कार्यरत थी।

आप न सिर्फ भारत सरकार द्वारा प्रदत्त साहित्यिक व अन्य हिंदी कार्यों में कार्यरत रहीं बल्कि सरकारी सेवाओं से इतर भी आपने कई साहित्यिक पुस्तकों का योगदान हिंदी साहित्य में किया।

आपकी प्रमुख रचनाओं में 'शब्द बोलेंगे', 'काली मशाल' इत्यादि प्रमुख हैं। 27 जून 2017 को आप असमय काल के हाथों दिगंत में चली गईं।

आपको हिंदी साहित्य में अमूल्य योगदान के लिए याद रखा जाएगा। आप अपने पीछे पति व दो पुत्रों को छोड़ गईं।

सम्पादक मण्डल कान्यकुब्ज वाणी डॉ. अर्चना त्रिपाठी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

ईश्वर आपको अपने श्री चरणों में रखे।



मनुर्भव ! मनुष्य बनो

स्वामी दयानन्द लिखते हैं— 'मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यो के सुख—दुःख और हानि—लाभ को समझे। ऐसा मनुष्य अन्यायकारी बलवान् से नहीं डरे किन्तु निर्बल धर्मात्मा से डरता रहे।

एक भेड़िया एक भेड़ को उठाकर ले जा रहा था। एक व्यक्ति ने दया करके उसको भेड़िये के चंगुल से छुड़ा लिया और अपने घर ले आया। रात के समय उस व्यक्ति ने छुरी तेज की और उसे भेड़ की गर्दन पर फेर दिया। भेड़ की आत्मा दुःखी होकर उसे धिक्कारने लगी, 'ओ निर्दयी मनुष्य! तूने मुझे भेड़िये से तो बचाया, परन्तु स्वयं मुझे खाने के लिए तैयार हो गया। तू भी तो भेड़िया ही निकला। तुझमें और भेड़िये में केवल इतना ही अन्तर है कि तू शकल से तो मनुष्य है, परन्तु स्वभाव का भेड़िया ही है।' वास्तव में संसार में आज अधिक संख्या उन लोगों की है जो आकृति से तो मनुष्य हैं, परन्तु स्वभाव पशु का है। इसलिए वेद कहता है— 'मनुर्भव'।

कार्यार्थी भजते लोकं, यावत्कार्यं न सिद्धति !

उत्तीर्णं च परे पारे, नौकायां किं प्रयोजनम् !!

अर्थात्— जिस तरह नदी पार करने के बाद लोग नाव को भूल जाते हैं ठीक उसी तरह से लोग अपने काम पूरा होने तक दूसरों की प्रशंसा करते हैं, और काम पूरा हो जाने के बाद उस व्यक्ति को भूल जाते हैं।



Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

Form for lifemembership of Kanyakubj Sabha &/ or Kanyakubj Vaani magazine

1. Name of Member:
 2. Age:
 3. Gotra:
 4. Father's/Husband's Name :
 5. Address :
.....
 6. landline/Mobile No.:
 7. Email :
 8. Name of spouse / Father'sName :
 9. Education :
 10. Occupation (Post/Designation) :
- | | Unmarried Children | Name | Age | Education | Job |
|----|--------------------|-------|-------|-----------|-------|
| a) | | | | | |
| b) | | | | | |
| c) | | | | | |
11. Any other information :

I want to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubj Pratinidhi Sabha &/or Kanyakubj Vaani** and Willing to pay Rs.....in Cash/Cheque No.Name of Bank.....favouring "Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratindhi Sabha, Lucknow" Payable at Lucknow.

12. Name of person introducing :

Date : (Signature)

.....

Reciept

Received with thanks Rs.in Cash /
Cheque No.Name of Bank
fromwho wants to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinibhi Sabha & / or Kanyakubj Vaani**.

(Signature)

1. Contribution for life member of Kanyakubja Sabha is Rs. 500/- (A/c. No. 20036640960, IFSC Code- ALLA0210062 Allahabad Bank Main Branch, Hazratganj, Lucknow). Form With This Cheque To Be Sent To Shri Upendra Mishra 4/53 Vishal Khand Gomti Nagar Lucknow.226010.
2. Contribution for life membership of Kanyakubja Vaani is Rs. 1100/- (A/c. No. 710601010023908, IFSC Code- VJB0007106, Vijaya bank, Hazratganj branch Lucknow). Form & cheque to be sent to Sri AK Tripathi, Haider Mirza Lane, Golaganj Lucknow.
3. Contribution for one issue of Kanyakubja Vaani is Rs.40/-+ postage charges.



Dr.DS shukla with Honourable Governor Uttar Pradesh, in governor house on occasion of release of TB Seal on 2nd October



डॉ. आर.के. मिश्रा मुख्य मंत्री के साथ



**सेक्टर - 18 में
अज्ञातशत्रु अटल को
श्रद्धांजलि**

शिव ओम मन्दिर कोयम्बटूर



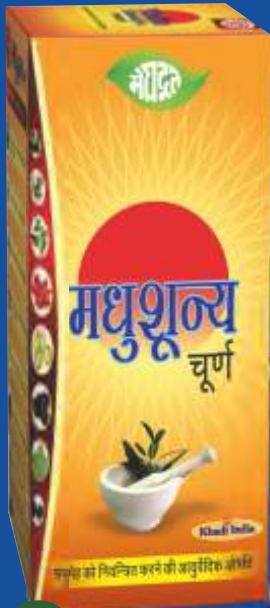
Neeraj Shukla Honoured

क्या आपको DIABETES है ?

यह औषधि मधुमेह को नियंत्रित करने के साथ ही अनियमित रक्तचाप और हृदय दुर्बलता को नियंत्रित कर शरीर में स्फूर्ति प्रदान करता है।

मधुशून्य चूर्ण

..अब जिन्दगी में भरिये
खुशियों की मिठास



NOW
AVAILABLE
IN TABLETS



मेघदूत

Madhu Shoonya

Ayurvedic
Proprietary Medicine
To Control Diabetes



डिस्ट्रीब्यूटर सम्पर्क करें

Contact: +91- 9235623142

www.meghdootherbal.com
info@meghdootherbal.com

